हिम – प्रभा

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	रचनाकार का नाम	पृष्ठ
1.	मौनम्	सोम दत्त शर्मा	1
2.	एक सन्त बादशाह	एन. के. जुल्का	2 – 3
3.	कहाँ जा रहे हैं हम?	अरूण कुमार	4 – 5
4.	मीडिया, वाह से आह तक	अरूण कुमार	6 – 7
5.	हिंदी भारत का स्वाभिमान	एन. के. जुल्का	8 – 9
6.	विसंगतियों से विकास मार्ग दर्शन	पवन कुमार	10 – 12
7.	धर्म जीतेगा, अधर्म हारेगा	सरदार रविन्द्र सिंह	13
8.	ज्योतिष में राहु ग्रह	सोमदत्त शर्मा	14 – 15
9.	मैं औरत हूँ, और औरत होने पर नाज करती हूँ	अनामिका शर्मा	16 – 17
10.	वो आदमी	वन्दना राणा	18
11.	अपना हाथ जगन्नाथ – सेहत का साथ	सोम नाथ सोनी	19
12.	सूरज	सिद्धांत	20
13.	बंटे खेत खलिहान	सुनील कुमार	21
14.	उम्मीद	गीता कमल	22
15.	नशे में सब संसार	अजीत सिंह	23 – 24
16.	जन सेवा जीवन का महत्वपूर्ण नियम	सरदार रविन्द्र सिंह	25
17.	स्वयं पर गर्व करें	समता खानचन्दानी	26 – 27
18.	अब सोचते हैं कि खुल कर जी लें जिन्दगी	सुनीता ग्रेवाल	28
19.	बस चला जा रहा हूँ	संजीव कुमार	29
20.	मेरे पिता	कीर्ति चतुर्वेदी	30 – 31
21.	कविता	विजय लक्ष्मी	32
22.	अन्तिम यात्रा का वर्णन	अरूण पारीक	33
23.	जो बीत गया सो बीत गया	संजीव कुमार	34
24.	हकीकत	लवली चौहान	35
25.	चीजें	वंदना राणा	36
26.	आओ, गाँव की ओर चलें	एच. आर. जसपाल	37
27.	फिर तलाश	एच. आर. जसपाल	38
30.	एक पाव मुस्कुराहट	शैलेश सोनी	39 – 40
31.	सफेद चादर	आरती शर्मा	41
32.	प्रयागराज या इलाहाबाद	शैलेश सोनी	42 – 43
33.	वर्षा जल के संरक्षण का महत्व	धर्मेंद्र कुमार	44 – 45
34.	कविता	अभिमन्यु कमलेश राणा	46
35.	तजुर्बा – ए – शिमला	समता खानचन्दानी	47

मौनम्

सोम दत्त शर्मा
पर्यवेक्षक से.नि.

मौनम आंशिक रूप से एक शिथलिकरण या आराम प्रदान करने वाली क्रिया है। मौन साधकर बैठने से मस्तिष्क शान्त होता है। परिणामस्वरूप कल्पना एवं चेतना में वृद्धि होती है और शान्ति सन्तोष एवं प्रसन्नता मिलती है। चेहरों पर सदा मुस्कान रहती है। वह सबका प्यारा बनता है। यह देखा गया है कि कुछ समय तक मौनम से पर्यावरण में व्याप्त शोर से होने वाले नुकसान से भी बचा जा सकता हैं मौनम से मानसिक उद्धिग्नता विद्रोह की भावना आदि कम होती है तथा अनुशासन व शांति की वृत्ति बढ़ती है। मौनम के अभ्यास से एकाग्रता में भी वृद्धि होती है जो संसार में सफलता हेतु अत्यन्त आवश्यक है।

मौनम की गहराई में ही ईश्वर की आवाज सुनी जा सकती है। भगवान की उपस्थिति मौन में ही अनुभव की जा सकती है। वह शब्द ब्रह्म है जो मौन की गहराई में अनुभव किया जा सकता है। अध्यात्मिक अनुशासन का प्रथम पग मौन है। इससे आत्म नियन्त्रण बढ़ता है और क्रोध, घृणा, लोभ ओर अहंकार घटता है। वाह्य मौनम के रहते आप नकारात्मक या दूषित विचारों की वजह से प्रभावित होंगे। मौनम में ही एकाग्रता बढ़ती है। मौनम तप एवं अनुशासन है। यह अर्न्तमुखी है। आध्यात्मिक मौनम के उदाहरण महात्मा गांधी, विनावा भावे, अरविंद आचार्य थे। रमन महर्षि का मौनम ही उनकी शिक्षाएं एवं अध्यात्मिक वचनामृत में उनका मौनम उनके शिक्षाएं व कर्म एवं वचनामृत थे। जब मन कर्म वचन में सामंजस्य न हो तो मौनम असम्भव है।

मन, वचन, कर्म के सामंजस्य से आन्तरिक शांति एवं संतुलन बनता है। मन के कारण मौनम दूषित होता है। कुछ क्षणों के लिए हमें शांत मौन बैठने का अभ्यास कर दूसरों को प्रेरित करना चाहिए। मौन जड़ता नहीं, मौन बैठने से तनाव उत्तेजना पर काबू पाया जा सकता है। मौन रहने के लिए शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक तालमेल की आवश्यकता है। श्रीमद्भागवत गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं का मौन अपनी महान विभूति बताया है। ईश्वर को गहन विश्राम में प्राप्त किया जा सकता है। मौन से चित शांत होता है। मौन से चेतना बढ़ती है। इच्छाशक्ति, आत्म–बल एवं संकल्प शान्ति में दृढ़ता आती हैं, अधिक बोलने वाला, हर कार्य में शीघ्रता करने वाला तथा फालतू बोलने वाला व्यक्ति कभी जीवन में सफल नहीं हो सकता। शांत रहकर मन को नियंत्रण कर एकाग्रचित्त होने से ही सफलता कदम चूमती है।

बोलने से पहले सोचो क्या यह आवश्यक है? क्या यह किसी को चोट तो नहीं पहुंचाएगा? क्या यह मौन से भी अधिक अच्छा है? हमारी सोच नकारात्मक न होकर सकारात्मक होनी चाहिए। यदि हृदय में सद्चरित्रता है तो चरित्र में सौन्दर्य होगा। यदि चरित्र में सौन्दर्य है तो घर में सामंजस्य होगा। यदि घर में सुव्यवस्था है तब राष्ट्र में सुव्यवस्था होगी। यदि राष्ट्र में सुव्यवस्था है तब विश्व में शान्ति होगी। मनुष्य युगों से शान्ति की खोज में भटकता रहा है। हमें कुछ क्षणों के लिए मौन रहकर शांति प्राप्त करनी चाहिए।

एक सन्त बादशाह

एन. के. जुल्का
से.नि. (वरिष्ठ लेखा अधिकारी)

परमार्थ का शौक किसी विशेष धर्म के लोगों को नहीं होता बल्कि सभी धर्मों में महान सन्त पीर पैगम्बर, गुरु पैदा हुए हैं। इसी तरह बुखारे के बादशाह इब्राहिम अधम–2 को परमार्थ का शौक हुआ । वह फकीरों की तलाश में रहने लगा लेकिन ऐश–ओ–आराम की जिन्दगी भी जीता रहा। उसकी सेज सवा मन फूलों से तैयार होती थी। एक दिन उसने अपने दो मंजिला मकान के उपर देखा कि दो आदमी घूम रहे है। पूछा भाई कौन हो? उन्होंने कहा ''हम सारबान हैं–कैसे आये हो? कहने लगे कि हमारा ऊंट खो गया है। तब बादशाह ने कहा ''कभी ऊंट महलों की छत पर आते हैं?'' जवाब मिला ''कभी परमात्मा भी सवा मन फूलों की सेज पर मिलता है? इतनी बात कह कर वे दोनों अलोप हो गए और राजा बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो उसकी सोच ने पलटा खाया और परमात्मा की तलाश में अपने मुल्क के फकीरों के पास जाने लगा। लेकिन तसल्ली न हुई। भारत में आया, बहुत ढूँढा, लेकिन फिर भी तसल्ली न हुई। आखिर वह काशी जा पहुंचा। कबीर साहिब से अर्ज की कि मुझे शागिर्द बना लो। कबीर साहिब ने कहा कि तू बादशाह, मैं एक गरीब जुलाहा। तेरा मेरा गुजारा कैसे होगा? अर्ज की कि बादशाह बनकर तेरे द्वार पर नहीं आया। एक गरीब भिखारी बनकर आया हूँ। खुदा के लिए मुझे बख्श लो। औरतें नर्म दिल की होती हैं, माता लोई ने जोकि कबीर साहिब की पत्नी थी, सिफारिश की, तो उसे रख लिया।

बादशाह जुलाहे के घर नलियां बटने और ताने तनने का काम करने लगा। छः साल गुजर गए। एक दिन माई लोई ने कबीर साहिब से अर्ज की कि यह बादशाह और हम गरीब जुलाहे। जो हम खाते हैं वही खाकर चुप रहता है, इसको कुछ दो। कबीर साहिब ने कहा कि अभी इसका हृदय निर्मल नहीं हुआ। माई लोई ने कहा जी इसकी क्या परख है? रूखी–सूखी खाकर यह हमारी सेवा करता है। हुकम मानने से इनकार नहीं करता। इसका हृदय कैसे निर्मल नहीं? कबीर साहिब कहने लगा ''अच्छा ऐसा करो, घर का कूड़ा करकट लेकर छत पर चढ़ जाओ। मैं इसको बाहर भेजता हूँ। जब यह जाने लगे तो इसके सिर पर डाल देना और पीछे हटकर कान लगाकर सुनना कि क्या क्या कहता है ''जब माई लोई ऊपर गई तो कबीर साहब ने कहा ''बेटा, मैं बाहर कुछ भूल आया हूँ, उसे अन्दर ले आओ।'' जब वह बाहर गया तो माई लोई ने कूड़े–करकट का टोकरा सिर पर डाल दिया और पीछे हटकर सुनने लगी। वह गुस्से से बोला ''अगर होता बुखारा तो करता सो करता।'' माई लोई ने कबीर साहब को बताया कि जी ऐसा कहता था। कबीर साहिब ने कहा मैंने तो तुझसे कहा था कि हृदय साफ नहीं हुआ, नाम के काबिल नहीं हुआ।

छः साल और बीत गए। एक दिन कबीर साहिब ने कहा कि बर्तन तैयार है। माई लोई ने कहा जी मुझे तो कोई फर्क दिखाई नहीं देता। जैसे पहले था वैसा ही हैं जिस तरह वह पहले हमारे हुकम से इन्कार नहीं करता था, अब भी उसी तरह हैं जो कुछ हम देते हैं खा लेता है। कबीर साहिब ने कहा, अगर तूं फर्क देखना चाहती है तो पहले तू घर का कूड़ा करकट ले गई थी उसी तरह अब भी ले जा। जब गली से निकले इसके सिर डाल देना। लोई ने ऐसे ही किया। जब बादशाह बाहर निकला तो माई लोई ने कुड़ा उसके सिर पर डाल दिया। बादशाह हंसा, खुश हुआ, उसका मुंह लाल हो गया और बोला, ''शाबाश डालने वाले। तेरा भला हो। यह मन अहंकारी था, इसका यही इलाज था।'' माई लोई ने आकर कबीर को बताया कि जी अब तो वह ऐसा कहता

था। कबीर साहिब ने कहा, मैं जो तुझ से कहता था कि अब कोई कसर बाकी नहीं है।

कबीर जैसा सन्त सतगुरु, बादशाह बुखारा जैसा शिष्य, फिर और क्या चाहिए था। जैसे ही कबीर साहिब ने उसे नाम दिया, उसकी रूह ऊपर चढ़ गई फिर कबीर जी ने कहा ''जा अब जहां मर्जी बैठ जा, तेरी भक्ति पूरी हो गई।''

''हम सोना तुम किया सुनारा, तावै धनी रू नाम तुम्हारा''

इब्राहीम अदम ने कुछ वर्ष अपने गुरु के चरणों में रहकर सेवा की और फिर उनका आशीर्वाद प्राप्त करके उनसे विदा लेकर आप बुखारा आ गए। परन्तु अब वह बादशाह नहीं बल्कि एक फकीर के तौर पर लौटे थे। एक दिन बादशाह दजला नदी के किनारे बैठा गुदड़ी सी रहा था। उसका वजीर शिकार खेलता-खेलता उधर आ निकला। बारह साल में शक्ल बदल जाती है। बादशाही पोशाक, कहां फकीरी लिबास। तो भी बजीर ने उसे पहचान लिया और पूछा ''आप बादशाह इब्राहीम अधम हो?'' जवाब मिला ''हाँ वजीर बोला, देखो मैं आपका वजीर हूँ। आपके जाने के बाद मैंने आपके बच्चों को तालीम दी, कितना अच्छा हो कि आप अब फिर मेरे बदशाह हो। यह सुनकर बादशाह ने जिस सुई से वह गुदड़ी सी रहा था वह सुई नदी में फैंक दी और कहा कि पहले मेरी सुई ला दो, फिर मैं तुम्हे जवाब दूँगा। वजीर कहने लगा कि मुझे आधे घण्टे की मोहलत दें, मैं आपको ऐसी लाख सुईयां ला दूंगा। बादशाह ने कहा नहीं मुझे तो वही सुई चाहिए। वजीर ने कहा यह तो नामुमकिन है। इतना गहरा पानी बह रहा है वह सुई नहीं मिल सकती। तब बादशाह ने नदी में तवज्जुह दी। एक मछली सुई मुंह में लेकर ऊपर आई। इब्राहीम अधम ने कहा कि मुझे तुम्हारी उस बादशाही को लेकर क्या करना है। मैं अब उस बादशाह का नौकर हूँ जिसके अधीन सारे खण्ड-ब्रह्माण्ड, कुल कायनात है। अब मैं वह नहीं जो पहले था। मुझे अब उन ब्रह्माण्डों का अनुभव हो गया है जिसके बारे कभी सोचा भी नहीं जा सकता।

नाम एक अमूल्य वस्तु हैं। सन्तों महात्माओं के पास नाम की दौलत होती है इसलिए वह सांसारिक पदार्थों से दूर रहते हैं। जिसे एक बार नाम का नशा चढ़ जाए उसे और किसी नशे या सरूर की आवश्यकता नहीं रहती।

नशा भंग शराब दा उतर जात प्रभात।
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।।

कहाँ जा रहे हैं हम?

अरूण कुमार (डी.ई.ओ.)
कास – II

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जन्म से लेकर मृत्यु तक वह समाज से जुड़ा रहता है। समाज और देश की तरक्की किसी भी मनुष्य का कर्तव्य व धर्म है। भूतकाल की बात करे तो मनुष्य का जीवन अपने व अपने समाज के उत्थान के लिए समर्पित था। समयान्तर में लोगों के घर बसे, गॉव–शहर बसा, यातायात के माध्यम बदले पहले पशुगाड़ी फिर मशीन गाड़ी और धीरे–2 मानव ने समय के साथ जल, थल और नभ तीनों पर अधिकार कर लिया और तरक्की ऐसी हुई की अब हम चॉद पर भी उतर गए है। परन्तु इस विकास और बदलाव में हमने एक चीज खो दी है और वह चीज है "मानवता" । मानवता अपने में प्यार, भाईचारा, आदर–सत्कार, सगे–संबंधी, स्नेह, बलिदान इत्यादि को समेटे हुए है। जब हम हमारी अपनी सभ्यता को समझते थे तब मॉ–बाप भगवान, गुरू ब्रह्मा समान, बड़ा भाई भी पिता व भाभी मॉ समान व छोटे बच्चे पुत्र–पुत्री, भाई–बहन समान समझा जाता था, जानवर को भी हम "मॉ" का दर्जा देते थे, जीवन के लिए आवश्यक अन्न–जल, वायु व पेड़–पौधे भी पूजे जाते थे, सबकी अपनी महत्ता थी। परन्तु आज हम कहॉ है! किस कीमत पर विकास को अपना रहे है? जरा गौर किजिए, मानवता खत्म हो रही है या खत्म हो गई है, परिवार बिखर गया है सगे–संबंधी छूट गये है, प्रेम अब स्वार्थ व लालच बन गया है, आदर –सत्कार और भक्ति सिर्फ दिखावा भर है, भाई चारा अब हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख–ईसाई में बॅट गया है जो एक दूसरे के खून के प्यासे है। देश भक्ति व बलिदान की बाते बेमानी हो गई है।

मानव के विकास के विज्ञान को अब हमने अभिशाप बना दिया है। हम विकास और विज्ञान के नाम पर प्रकृति से खिलवाड़ कर रहे है। घर, सड़क, उद्योग–धंधों के लिए लगातार पेड़ पौधें को काट रहे है, जानवरों को बेघर कर रहे हैं, पशु पंछी को तो अब सिर्फ दिखावा और भोजन के लिए पाल रहे है।

इस अप्राकृतिक बर्ताव के पीछे कारण चाहे जो भी हो (सामान्यतः लोग जनसंख्या को कारण मानते है)लेकिन इसके जिम्मेवार तो हम मानव ही है। आज इस धरती पर जनसंख्या रूपी बोझ इतना बढ़ गया

है कि आने वाले कुछ वर्षों में इस बोझ को दूसरे ग्रह पर वसाने की तैयारी अभी से शुरू हो गई है। हम जानवर से इंसान बने और आज हम पुनः जानवर बनते जा रहे है इस तरह हम "पुनः मुषको भवः" वाली कहावत को चरितार्थ कर रहे है।

हमें विकास क्यों चाहिए? तो उत्तर साफ है अच्छे पर्यावरण, स्वस्थ शरीर, उन्नत व खुशहाल जीवनशैली के लिए । लेकिन हमें क्या मिल रहा है? जरा सोचे। हमने अपने विकास के नाम पर जल, थल और नभ को प्रदूषित कर इस प्राकृतिक पर्यावरण को खत्म सा कर दिया है। आज कई जगहो पर हमें श्वास के लिए कृत्रिम ऑक्सीजन का सहारा लेना पड़ रहा है। आज हम हर पल प्राकृतिक खतरों से डरे रहते है जैसे की भूकम्प, बाढ़, सूखा और इन सबके लिए हम ही जिम्मेवार है। हमारी शिक्षा व्यवस्था का व्यापारीकरण हो गया है जिसने समाज के हीरे को भी कोयला बना दिया है। भ्रष्टाचार तो अपने शीर्ष पर है और मानवता पाताल के गर्त में। अब आप ही बतायें कि क्या अगर इस कीमत पर विकास मिले तो ठीक है या नही?

आज हम अपने आस-पास के पर्यावरण के संरक्षण का काम न करके एक दूसरी दुनिया तलाश करने मे अपनी ऊर्जा व धन खर्च कर रहे है। मैं पूछता हूँ कि अगर हम अपने में सुधार करें, पुराने ढ़ांचे को विकसित करें, जनसंख्या को नियंत्रित करे, पेड़-पौधें लगायें व उन्हे बचायें तो क्या हमें दूसरी दुनिया तलाशने की जरूरत होगी?

तो एक बार पुनः विचार करें की "कहाँ जा रहे है हम" वास्तविक प्रगति की ओर या होने वाले विनाश की ओर।

मीडिया, वाह से आह तक

अरूण कुमार (डी.ई.ओ.)
कास - II

मीडिया को समाज में लोगों की आवाज, लोगों की ताकत, तीसरी ऑख और प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है और कहा भी क्यों न जाए। यही मीडिया तो हमें समाज और देश-विदेश का ज्ञान देती और दिखाती है। अगर मीडिया न हो तो सोचो हमारी हालत क्या होगी? यह हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बनता जा रहा है। वैसे तो मीडिया के कई रूप है लेकिन जो सबसे ज्यादा प्रयोग हो रहा है वे है टीवी पर प्रसारित होने वाले समाचार, विज्ञापन, समाचार पत्र, सोशल मीडिया यू-टयूब, फेसबुक, व्हाटसऐप, ट्वीटर, इन्स्टाग्राम इत्यादि। मीडिया के द्वारा प्रसारित या प्रचारित तथ्य चलचित्र या ध्वनि के द्वारा या लिखित रूप में हो सकता है। मीडिया के द्वारा प्रचारित/प्रसारित की गई बाते तत्काल प्रभाव दिखाती है और इसका असर हमारे दिलो-दिमाग पर काफी समय तक रहता है।

मीडिया के लिए या मीडिया में काम करने वाले ऐसे लोग जिन्हे हम टीवी पर बोलते हुए सुनते व देखते है या किसी समाचार पत्र में लिखते है उन्हे हम सभी पत्रकार के रूप में जानते है। प्रारंभ में पत्रकारिता/मीडिया कोई उद्योग नहीं था बल्कि अपनी बातों को चाहे वह कोई मांग हो, किसी का कोई रोष हो, सुझाव हो या कोई सूचना हो को जन समूह तक पहुचाने का एक माध्यम था। अगर भारत की आजादी की लड़ाई का संदर्भ ले तो बाल गंगाधर तिलक जी द्वारा छापा गया केसरी, मराठा, गाँधी जी द्वारा लिखीं गई हरिजन या सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद या वीर सावरकर जैसे देश भक्तों द्वारा लिखी गई पत्र-पत्रिका और पर्ची ने देश के हर वर्ग को देश भक्ति का पाठ पढ़ाया और आजादी में अपना योगदान देने को प्रेरित किया। इस तरह आजादी की लड़ाई में मीडिया और पत्रकारिता एक हथियार के रूप में प्रयोग हुआ जिसने बिना खून बहाये गुलामी की जंजीर को तोड़ने में अपनी अहम भूमिका निभाई।

भारत की आजादी के बाद हमारे पास मीडिया के नाम पर एक डीडी-1 तथा कुछ स्थानीय भाषा के समाचार चैनल थे और उनका साथ देने के लिए कुछ समाचार पत्र व पत्रिका थे जो भारत के विभिन्न राज्यों में छपा करते थे । समय-समय पर इस मीडिया में बहुत विकास व बदलाव हुआ जो समाज को उसका सही चेहरा दिखाती रही, परन्तु मीडिया और पत्रकारिता का यह बदलाव 21वी शताब्दी में अचानक अति भयावह हो गया जैसे नदी में बाढ़ आ जाने पर जीवनदायी जल काल बन जाता है उसी तरह मीडिया और पत्रकारिता का चेहरा बदल गया, मीडिया चैनलों की बहार आ गई टीवी पर 300 से भी अधिक चैनल आ गये जिसमें 25-30 तो समाचार चैनल है। मीडिया का व्यापारीकरण हो गया और अब वो टीआरपी के लिए और पैसों के लिए काम करने लग गई। यहा तक तो बात फिर भी कुछ ठीक थी परन्तु इसमें बड़े राज-घराने, कुछ खास तरह के लोगों व नेताओं का प्रभुत्व इस मीडिया पर हावी होने लग गया। ऐसा नहीं है कि सभी मीडिया बिकाऊ हो गए और उनके रंग में रंग गये परन्तु ऐसे मीडिया और पत्रकारों की गिनती ज्यादा हो गई। मीडिया और

पत्रकारिता का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता गया और वे अब अपनी नैसर्गिक कार्यो को छोड़कर कुछ विशेष तरह के कार्य करने लगे है और इसे अब उद्योग बना दिया गया है। मानवता तो जब हम में से ही खत्म हो गई है तो भला इनमें कैसे बची रह सकती है। लोग मरते रहते हैं और पत्रकार इसकी खबर बनाता रहता है, लोग डूबते हैं, बेघर होते हैं, किसी की जिंदगी तो किसी इज्जत जाती रहती है और ये अपनी टीआरपी के लिए उनका मसाला व सनसनी-खेज खबर बनाकर समाज को परोसते रहते हैं, बात यही खत्म नहीं होती ये समाज को झूठी या भड़काऊ जाति-धर्म की खबर बार बार सुनाकर/दिखाकर समाज के लोगों को आपस में लड़वाने का भी काम करते है। इसके विपरीत जो मीडिया चैनल व पत्रकार अपना ईमान-धर्म बचाये हुए है उन्हे कुछ बाहरी ताकतों की प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ता है।

तो अब ऐसे परिवेश में एक बार यह सवाल जरूर उठता है कि तमाम तरह के सरकारी नियम के होते हुए भी कुछ मीडिया चैनल, पत्रकार कैसे धर्म के नाम पर लोगों को लड़वाकर, गलत समाचार को फैलाकर, किसी खास तरह के लोगों को फायदा पहुँचाकर तो किसी को नीचा दिखाकर अपनी रोटी सेंक रहे हैं? मीडिया अपना स्वर्णिम इतिहास भूलकर अपने नकारात्मक रवैये से देश को नुकसान पहुँचा रही है जिसके कई उदाहरण है जैसे- पुलवामा हमले के बाद की कहानी, लोक सभा चुनाव, असम व बिहार में बाढ़ की कहानी, दिल्ली व उत्तर प्रदेश में जातीय कहानी इत्यादि।

अब समय आ गया है कि जिस तरह लोगों ने मीडिया और पत्रकारिता को नई ऊचाईयां दी उसी तरह अब वे ऐसे सभी चैनल व पत्रकार, समाचार पत्र जो समाज में गलत अवधारणा बनाने का कार्य कर रहे है उसका बहिष्कार करें ताकि वे घरातल पर आ सके उनको उनकी औकात दिखा सके, उन पर लगाम लग सके, साथ ही साथ जो चैनल या मीडिया आज भी पत्रकारिता की गरिमा को बनाये हुए हैं उनका साथ दे, उन्हे आगे लाये ताकि देश की जनता को सही समाचार व देश-विदेश का हाल प्राप्त हो सके।

अंत में यही कहना चाहुंगा कि देश की तीसरी ऑख को यह चाहिए की वह हकीकत देखे और जनता को हकीकत दिखाये साथ ही साथ जनता व देश की समस्या को प्राथमिकता दे न की सिर्फ टीआरपी पर ध्यान दे और अपने स्वर्णिम अतीत को अपनी पत्रकारिता के माध्यम से पुनः जीवित करें, अपने गौरव को बढ़ाये, जनता का विश्वास जीते व इन्सानियत को जिंदा रखने में अपनी भूमिका निभाये।

हिन्दी भारत का स्वाभिमान

एन. के. जुल्का
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(से.नि.)

मनोवैज्ञानिक व्याख्या है कि व्यक्ति अपने जीवन में जो अभिलाषा पूरी नहीं कर पाता, उसे वह अपनी सन्तान से करवा कर तृप्त होता है। जैसे वह डाक्टर बनना चाहता है। मगर नहीं बन पाया तो बेटे को डाक्टर बनाने की कोशिश करता है। उसकी अच्छे कपड़े पहनने की बहुत इच्छा थी मगर बेचारी पहन न पाई। अब अपनी बेटी को अच्छे ड्रेस दिलवाकर मन को सन्तोष देती है। उसने अपने पुत्र पुत्री को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में इसलिए पढ़ने के लिए भेजा क्योंकि उसे अंग्रेजी नहीं आती। जब वह लोगों को अंग्रेजी पढ़ते बोलते देखता है तो खुद की आत्मग्लानि में अपने आप की नजर में गिर जाता है। उसकी भी अपनी प्रतिभा है, उसकी भी अपनी योग्यता और विशेषताएं हैं जो बहुमूल्य ही नहीं हैं, अमूल्य हैं। मगर वह उन सबको भुला कर अंग्रेजी के आगे अपने को दीन – हीन समझता है।

इस बात पर फिर चिन्तन करें तो हम पाते हैं कि अंग्रेजी के आगे वह अपना आत्म स्वाभिमान खो बैठता है और दूसरी बात यह कि उसे अपने बच्चों से प्यार भी है। वह अपने बच्चों को दुनिया की दौड़ में पीछे नहीं देखना चाहता। ठीक यही बात अपने देश के कुछ लोगों की है जो अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजियत के दीवाने हैं वह भारत को इंग्लैंड की तरह उन्नत देखना चाहते हैं। सच में यह उनका देश प्रेम है मगर भारत के लिए बड़ा खतरनाक है, क्योंकि भारत के पास अपनी संस्कृति है। भारत के पास अपनी भाषा है। भारत मात्र भूमि नहीं एक राष्ट्र है इसलिए हमें राष्ट्रवाद की भावना के साथ संस्कृति, विकास और आध्यात्म को साथ ले के प्रगति और समृद्धि को प्राप्त करना है।

इंडिया को उजागर करने के लिए भारत के गौरवशाली इतिहास को भुला दिया गया। भाषा के नाम पर भारत से छल किया गया। अंग्रेजी को राजभाषा रहने का कोई हक नहीं है। क्योंकि वह भारत के किसी एक गांव में भी बोली जानेंवाली भाषा नहीं है। किसी भारतीय की मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है। अंग्रेजी को अपनाना मात्र हमारे दिमाग में गुलामी की दासता की जड़ें बड़ी गहरी बैठी हैं, बस यही दर्शाता है।

अंग्रेजी की दुहाई देते हुए कहा जाता है कि यह विश्व की सम्पर्क भाषा है। यह बात भी पूरी तरह गलत है। जो 40 देश अंग्रेज के गुलाम रहे हैं और अमेरिका और इंग्लैंड ही अंग्रेजी को जानते हैं। जब कि विश्व के 160 देश अंग्रेजी नहीं जानते। विश्व में सब से ज्यादा बोली जानेवाली भाषा चीनी है। और दुसरा क्रमांक हिन्दी भाषा का है। रूसी, स्पेनिश, पुर्तगाली और फ्रांसिसी, डच इत्यादि ग्यारह भाषाओं के बाद सब से ज्यादा बोली जानेवाली भाषाओं में अंग्रेजी बारहवें पायदान पर है। फिर यह कैसी विश्व भाषा! यह भी सत्य है 30 करोड़ लोग ही अर्थात विश्व की 4 प्रतिशत आबादी ही अंग्रेजी को जानते, बोलते समझते और लिखते हैं। हमारा चीन से व्यापार बढ़ा है। यहा अंग्रेजी कुछ काम नहीं आ रही। भारत और चीन की बात द्विभाषियों में होती है। हम रूस, जापान, जर्मनी आदि से भी अंग्रेजी में बात नहीं कर सकते। अतः जिनके दिमाग में अंग्रेजी की श्रेष्ठता का कीड़ा लगा हुआ है उन्हें अपने दिमाग को ठीक करना चाहिए।

अंग्रेजी एक अधूरी भाषा है जब कि हिन्दी अपने आप में परिपूर्ण भाषा है। मैं अंग्रेजी प्रेमियों से पूछता हूँ क्या वह हिन्दी के इस वाक्य का अंग्रेजी में अनुवाद कर सकते हैं। कल दो तरह के है, एक वह जो बीत गया तथा दूसरा वह जो आयेगा, अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद हो ही नहीं सकता इसीलिए यह अधूरी भाषा है। अंग्रेजी बुद्धिजीवियों का कहना है कि पश्चिम ने पूर्व वालों को अंग्रेजी भाषा देकर रोशनी दी है यह सरासर झूठ है। सूर्य तो हमेशा से पूर्व में ही उगता आया है और पूर्व वाले ही पश्चिम को रोशनी

देते आये हैं। प्रकृति को भी हिन्दी भाषा से ही प्रेम है।

एक बच्चा जब माता की कोख से जन्म लेकर प्रकृति की गोद में आता है तो वह रोता है और उसके रोने ... आ ..... ऊ ..... आं के स्वर निकलते हैं यह हिंदी के स्वर ही तो हैं। बच्चा चाहे किसी भी राष्ट्र या देश का क्यों न हो वह जन्म लेते समय रोते हुए यही स्वर निकालेगा।

वैसे भी अंग्रेजी कोई श्रेष्ठ भाषा नहीं है। उसका व्याकरण बिना लगाम के घोड़े जैसा है। जिसमें कोई वैज्ञानिकता नहीं है। पांचवी शताब्दी में इंग्लैण्ड के जंगली लोगों ने इसे बोलना शुरू किया और बनी अंग्रेजी भाषा। इससे पहले वहां लैटिन भाषा चलती थी। अंग्रेजी के शब्द भी इधर – उधर की भाषाओं से उधार लिए गए जो संख्या में एक लाख 26 हजार शब्द ही हैं। अंग्रेजी मूल के तो मात्र पैंसठ हजार शब्द हैं जबकि हिंदी के अपने मौलिक शब्द साठ लाख हैं।

यह भी तर्क दिया जाता है कि दक्षिण भारत के लोग हिंदी नहीं चाहते, वह हिंदी प्रेमी नहीं है। वह कभी भी हिंदी प्रेमी नहीं थे। यह बात पूरी तरह असत्य है। गुरु गोविंदसिंह जी ने जब पांच प्यारों कों आनन्दपुर साहब में दीक्षा दी तो उसके पश्चात उन पांच प्यारों को हिमाचल प्रदेश के पौन्टा साहब ले गए उन्हें हिंदी ज्ञान देने के लिए दक्षिण भारत भेजने की व्यवस्था की। यदि दक्षिण भारत के किसी भी मन्दिर में जाए तो मन्दिर के पुजारी पूछते हैं क्या मैं आपको मन्दिर की पृष्ठभूमि हिंदी भाषा में समझाऊँ। केरल के हर मन्दिर में मैंने ऐसा ही सुना। ऐसा कहना कि दक्षिण भारत के लोग हिंदी पसन्द नहीं करते यह सिर्फ दक्षिण को अपमानित करने की ही बात कही जाएगी।

हिंदी ही वह भाषा है जो भारत की प्रतिभा निखार सकती है। अतः मात्र हिंदी दिवस पर हिन्दी के लिए मातम मनाने से कुछ नहीं होगा। हिंदी को राजभाषा बनाना चाहते हैं तो संसद और विधानसभाओं में हिंदी चाहने वालों को पहुँचाओ। जब तक काले अंग्रेज शासन करते रहें। तब तक अंग्रेजी ही राजभाषा रहेगी। हमें राजतंत्र, कानून, शिक्षा, चिकित्सा और कृषि आदि सभी क्षेत्रों में हिंदी और भारतीय भाषाएं ही चाहिए। यही मांग है भारत स्वाभिमान अन्दोलन की।

विसंगतियों से विकास मार्ग दर्शन

पवन कुमाऱ
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

दोस्तो! मैं आज 1978-79 की स्कूल की स्मृतियों की यात्रा में आप का अभिनंदन कर रहा हूँ। जब हम डी0ए0वी स्कूल की तीसरी कक्षा में थे। बात कुछ यूं घटी कि हमारी अध्यापिका सुश्री सुधा के कक्षा में देर से आने के कारण सभी बच्चे शोर व बातचीत में मस्त थे। तभी साथ की चौथी कक्षा के अध्यापक आ गये थे। हमारे शोर से उनके अध्यापन में बाधा हो रही होगी, तभी उस कक्षा से आकर एक छात्र ने हम सब को शांत रहने का उस चौथी कक्षा के अध्यापक का मैसेज दे दिया था।

मैं, निर्मल, कुलदीप, कृष्ण हमेशा की तरह सबसे पीछे की पंक्ति में बैठते थे। हमारी सीट के पीछे दीवार में खिड़की थी जिसके शीशों पर ब्राऊन पेंट किया हुआ था। ताकि दोनों कक्षाओं के छात्रों में नोक झोंक न हो सके। शोर लगातार मचता रहा तभी उस तरफ से एक उदण्ड सी ध्वनि हमारे कानों में पहुंची, "चुप नहीं होते तुम साला", क्योंकि यह ध्वनि अध्यापक की नहीं थी। हमें चुनौती लगी। हमने खिड़की का विस्तार से निरीक्षण किया तो पाया की उस की चौखट में एक छेद सा है, जहाँ से पैंसिल उस ओर क्रास कर सकती है। वहीं से वह चुनौती पूर्ण ध्वनि हम तक आई। जवाबी कार्यवाही हो, मित्रों की आंखों से झलक रहा था। तुरन्त जवाब दे दिया गया "साले तुझ को क्या तकलीफ हो रही है ?

पुनः दूसरी ओर से ध्वनि आई, "तेरे थप्पड़ पड़ेंगें"।

मैनें कहा युद्व में हथियार बदलो, अब तो लिखित में कार्यवाही होगी। बस ग्रुप से एक मिनट चर्चा हुई और सहमति मिल गई। कापी के पेज में से 2 ईंच की पर्ची पर पैंसिल से डराने वाला सन्देश लिख, गोल पैंसिल की तरफ फोल्ड कर शत्रु सीमा में उसी छेद से मिसाईल की तरह दाग दी गई। साथ में ध्वनि चेतावनी भी जारी कर दी गई। मित्रों का ग्रुप निर्मल, कुलदीप, कृष्ण व स्वयं अति प्रसन्नचित व सैनिक मुद्रा के आवेश में थे। जैसे बार्डर पर हमारी जिम्मेवारी आन पड़ी हो। 2 मिनट बाद दूसरी ओर से भी पेपर बम आया। ग्रुप ने पढ़कर उचित निर्णय किया व आगामी कार्यवाही कुछ कड़ी हो ऐसा निर्णय हो चुका था। फिर कार्यवाही की गई।

दोस्तों इस ग्रुप ने उस दिन उस छेद रूपी सर्च ईंजन से मैनुअल वटसअप रूपी मैसेज का आविष्कार कर लिया था। चलो बाद में अपग्रेड कर गुगल को क्रेडिट मिला। इस बारे में ग्रुप परवाह नही करता।

दोस्तों का ध्यान पूरी तरह से शत्रु पक्ष को नेस्तनाबूत करने का था। गोला बारी दोनों तरफ से रूक रूक कर चल रही थी। जवाब गहरे से गहरे होते जा रहे थे। दोस्तों इस युद्ध कार्यवाही में अध्यापिका सुश्री सुधा कब आई व क्या पढ़ाने लगी, ग्रुप सैनिकों को कोई ध्यान न था। फिर भी ब्लैक बोर्ड पर दृष्टि व पूर्ण चेतना युद्ध प्रक्रिया पर थी।

अचानक मेरे दिमाग में एक खुराफाती विचार आया, मैनें मैसेज में दूसरे पक्ष के लड़के को लिखा ''साले तु जली **कटी** रोटी खाता है क्योंकि तेरी माता श्री ऐसी ही रोटी बनाती है''- बस यही कुछ अनीति - कर हो गया जो शायद ईश्वर को भी अच्छा न लगा। वैसे तो अवतार व विद्वानों का मत है **कि प्यार व युद्व में सभी नीतिकर ही होता है,** पर आज भी मैं इस स्मृति को याद कर स्वयं को गलत मानता हूँ क्योंकि माँ सब की एक जैसी होती है, उन का नाम युद्व में इस्तेमाल करना कदाचित गलत था। बस फिर क्या घटा जैसे की मिसाईल चौथी कक्षा में दागी व दूसरा पक्ष उसे पढ़ ही रहा था, अध्यापक श्री दुर्गा दास जी की नजर उस पर पड़ गई। उक्त छात्र को पास बुला कर पूछा तो उसने मिसाईल् उन को सौंप दी व यह भी बताया की दूसरी कक्षा का छात्र अनाप शनाप बोल रहा है। बस फिर क्या था वहाँ से लड़के आये ओर मैडम को बताया कि उक्त छात्र जो खिड़की के आगे बैठा है उसे अध्यापक श्री दुर्गा दास बुला रहे है व पूरा घटनाक्रम भी बता दिया। बस हमें युद्ध बंदी के रूप में ले जाया जा रहा था। ग्रुप के शेष सैनिक शोकाकुल अवस्था में थे।

अपराधियों की तरह हम को अध्यापक श्री दुर्गा दास जी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। तुच्छ सी छानबीन-वार्तालाप के पश्चात हमारे बालों को खिंचा गया, कान को मरोड़ा जा रहा था। मुँह व पीठ पर थप्पड़, मुक्के पड़े व दुत्कारते हुए वापिस अपनी कक्षा में जाने का निर्देश दिया गया।

चौथी कक्षा से आते ही मैने अपना आत्म निरीक्षण कर लिया। कानों में उंगलियाँ लगाई कदाचित गर्म हो चुके थे। बालों में हाथ घुमा कर उनको यथास्थिति में स्थित किया। मैडम से कक्षा में आने की अनुमति मांगी उसने भी कुछ डांट लगाई। बस अपना ध्यान तो ग्रुप व ग्रुप का ध्यान मुझ पर ही था। सीट पर बैठते ही निर्मल, कृष्ण ने मर्म हाथ मेरी पीठ पर रखे जैसे वह कर रहे हो युद्ध शिविर में पुनः सैनिक का अभिनन्दन।

मास्टर की मार की मानसिक पीड़ा से अभी भी कुछ ग्रसित था।

मैडम सुधा बाहर अन्य अध्यापक के साथ वार्तालाप मे व्यस्त हो गई। कृष्ण ने कहा बहादुर तुझे वहाँ चौथी कक्षा में क्या कुछ किया तो नहीं- और खड़ा हो गया। मैंनें बताया सैनिक के कानों व मुख व बालों पर कहर ढाह दिया गया। पर कोई बात नहीं पुनः पीठ थपथपाई, मन शांत सा हो रहा था।

निर्मल ने कहा कि यार यह सब युद्ध के अपरिहार्य भाग है। कृष्ण ने मेरे सिर पर हाथ रखा जैसे मुझे शौर्य अवार्ड दे रहा हो। फिर अपने हाथों को देख बोला यार इतना तेल सिर पर क्यूँ ?

कुलदीप फुसफुसाया दुश्मन का तेल निकालने के लिये ही लगाया है प्यारे।

कृष्ण एक दम तत्परता से बोला- बस यहीं पर दुर्गा दासजी ने गलती कर दी, यह सुनकर सारा ग्रुप उस की तरफ देखने लगा कि **क्या गल्ती**। वह बोला सैनिक के सिर से छेड़ छाड़ उचित नहीं, मास्टर को उचित कीमत चुकानी होगी। मैने पुछा वह कैसे। उसने कहा सैनिक के सिर का तेल उस के हाथों में लग

गया है। लंच में खाना खाने से पूर्व ही पश्चात्ताप वश उन्हें साबुन से बार बार हाथ धोने पड़ेंगें। वरना लंच नहीं कर पाएँगें। निर्मल ने कहा- **"सही बात एकदम"** ।

ग्रुप के साहसी मित्रों ने मेरे हाथ को अपने हाथ में ले लिया, बस आपस में एकता से ध्वनि निकली- **जय हो व शत्रु सेना को भय हो।** पुनः सैनिक छावनी लंच की घंटी बजने पर बाहर की ओर गर्व से मार्च करती हुई निकल रही है। उत्साह व उमंग से परिपूर्ण

(यारो आज भी **युद्ध** का विंग कमांडर कृष्ण सुबह ही 4-30 बजे से रात्रि 11 बजे तक नवीन ग्रुप की सेवाओं में तत्परता से जुटे मिलेंगें। साथ ही ग्रुप में स्फूर्ति व ताजगी रहे व्यंग रूपी बम बारिश कर अपना निर्वहन करते है।

निर्मल, कुलदीप व स्वयं भी उन की कर्तव्य निष्ठा व चेष्टा का सहायक के रूप में निगरानी रखते है व कृष्ण का हौंसला बढ़ाते है)

दोस्तों निवेदन है कि ऐसे बचपन के अबोध स्मरणों को पुर्नजीवित कर ग्रुप में रोचकता व स्पंदन बनाये रखे।

धर्म जीतेगा, अधर्म हारेगा

सरदार रविन्दर सिंह
एम.टी.एस.

दीपक बुझने को होता है तो एक बार वह बड़े जोर से जलता है तो एक बार बड़े जोर से हिचकी लेता है। चींटी को मरते समय पंख उगते हैं। पाप भी अपने अंतिम समय में बड़ा विकराल रूप धारण कर लेता है। युग परिवर्तन की संधिवेला में पाप का इतना प्रचंड, उग्र और भयंकर रूप दिखाई देगा जैसा सदियों से न देखा गया, न सुना गया । दुष्टता हद दर्जे को पहुंच जाएगी। एक बार ऐसा प्रतीत होगा कि अधर्म की अखंड विजय दुंदुभि बज गई और धर्म बेचारा दुम दबाकर भाग जाएगा, किन्तु ऐसे समय में भयभीत होने का कोई कारण नहीं। अधर्म की यह भयंकरता, अस्थायी होगी, उसकी मृत्यु की पूर्व सूचना मात्र होगी। अवतार प्रेरित धर्म भावना पूरे वेग के साथ उठेगी और अनीति को नष्ट करने के लिए विकट संग्राम करेगी। रावण के सिर काट देने पर भी फिर नए उग आते थे। फिर भी अन्त: रावण मर ही गया।

अधर्म से धर्म का, असत्य से सत्य का, दुर्गंध से मलयापिल का, सड़े हुए कुविचारों से नवयुग निर्माण की दिव्य भावना का घोर युद्ध होगा । इस धर्म-युद्ध में ईश्वरीय सहायता न्यायी पक्ष को मिलेगी। पांडवों की थोड़ी सी सेना कौरवों के मुकाबले में, राम का छोटा सा वानर दल विशाल असुर सेना के मुकाबले में विजयी हुआ था। अधर्म अनीति की विश्वव्यापी महाशक्ति के मुकाबले में सतयुग निर्माताओं का दल छोटा सा मालूम पड़ेगा, परन्तु भली प्रकार नोट कर लीजिए, हम भविष्यवाणी करते हैं, कि निकट भविष्य में सर्वत्र सदभावों की विजय पताका फहराएगी।

ज्योतिष में राहू ग्रह

सोमदत्त शर्मा
पर्यवेक्षक (से.नि.)

राहू ग्रह को कलयुग में ग्रहों का राजा माना जाता है। राहू छाया ग्रह है। मायावी है, जो राजनीति का प्रतिनिधित्व करता है। यह ग्रह अचानक जीवन में उथल पुथल मचाता है। दुर्बलता योग, शोक धन और व्यापार हानि का भी कारण बनता है।

पुराणों में प्राप्त जानकारी के अनुसार देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया और उसमें से प्राप्त अमृत को वितरण के लिए भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर दानवों को प्रभावित कर देवताओं को अमृत वितरित कर रहे थे तब राहू ने यह बात ताड़ ली और वह छदमवेश के रूप में देवताओं की पंक्ति में बैठ गया और भगवान विष्णु के मोहिनी रूप में अमृत पाने में सफल हो गया। यह घटना सूर्य और चन्द्र देख रहे थे सो उन्होंने यह बात विष्णु भगवान को बता दी। जिसके परिणामस्वरूप भगवान ने अपने सुदर्शन चक्र से राहू के मस्तिक को काट दिया किन्तु वह तो पहले ही अमृत पान कर चुका था,
अत: मरा नहीं बल्कि अमर हो गया। दो भागों में विभक्त होने के बाद भी उसके सिर और धड़ दोनों ही जीवित रहे। जिनमें से सिर का नाम राहू और धड़ का नाम केतु पड़ गया। ऐसा माना जाता है कि तब से राहू–केतु चन्द्र और सूर्य से दुश्मनी पालते हैं और उन्हें ग्रहण लगाते है।

प्राचीन काल में मुख्य रूप से सात ग्रह माने जाते थे। किन्तु कालान्तर में ज्योतिष वर्ग द्वारा राहू केतू का प्रभाव भी जीवन पर महसूस किया और राहू–केतु को छाया ग्रह के रूप में मान्यता दे दी।

छाया ग्रह होने के कारण इनमें कई बातें अन्य ग्रहों के विपरीत पाई जाती है। यह सदा एक दूसरे के आमने सामने ठीक 180 अंश के कोण पर रहते हुए सौर मण्डल में विपरीत दिशा में उल्टे चलते हुए सूर्य के चक्कर लगाते हैं।

एक राशि पर लगभग डेढ़ वर्ष तक राहू–केतू रहते हैं, अत: सम्पूर्ण राशियों का एक भ्रमण करने में राहू केतु को लगभग अठारह वर्षो का समय लग जाता है। चूंकि यह छाया ग्रह है अत: इन्हें किसी भी राशि का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। कुछ ज्योतिषी राहु को वृष में कुछ मिथुन राशि में उच्च का मानते है। इसी प्रकार राहू को वृश्चिक में कुछ ज्योतिषी धनु में नीच मानते है। इसे दशम स्थान में होने पर शक्तिशाली माना जाता है। यह जिस ग्रह की राशि में बैठता है उस ग्रह के स्वभाव के अनुसार फल देता है।

राजनीति का कारक होने के साथ ही जातक में शक्ति, हिम्मत, शौर्य, पाप, कर्म, व्यय, शत्रुता, दु:ख, चिन्ता, दुर्भाग्य, संकट आदि का अध्ययन किया जाता है। रोगों की दृष्टि में यह शरीर में मानसिक स्तर के सभी रोगों को उत्पन्न करने में सहायक होता है। हृदय रोग किसी भी प्रकार के विष और विष से बिमारियां, कोढ़, सर्प दंश, भूत–प्रेत, पिशाच आदि से संबंधित व्याधियां और किसी भी प्रकार की घटने वाली आकस्मिक दुर्घटनाओं का प्रतिनिधि ग्रह है। नैसर्गिक रूप में राहू में शनि तथा केतु में मंगल के नैसर्गिक गुण विद्यमान होने से यह उनके समान ही फल देते हैं।

जब जातक के जन्म के समय राहू केतु के एक ही ओर सारे अन्य ग्रह हो जाए तो जन्म कुण्डली में बने इस योग को काल सर्प योग कहते हैं। जो पाप, दुर्भाग्य, अचानक उन्नति–अवनति और अचानक उत्पन्न होने वाले दुखों का प्रतिनिधित्व करता है। साथ ही यह जातक को राजनीति, साहस और ख्याति का भी प्रतिनिधित्व करता है।

जन्म कुण्डली में राहु अनिष्टकारी स्थिति में दान करने से लाभ होता है। सरसों का तेल, तिल, नीले रंग के वस्त्र, कम्बल,

सरसों आदि दान करने से लाभ प्राप्त होता है। पानी वाला नारियल के जल प्रवाह करने या मन्दिर में चढ़ाने से भी ग्रह शांति होती है। गोमेद रत्न धारण करने से लाभ होता है।

राहु से उत्पन्न सभी अनिष्ट कारक स्थिति में शांति के लिए असुर मर्दिनी भगवती दुर्गा की उपासना करे। नित्य दुर्गा-पाठ उंचे स्वर में करें। साथ में गुगल की नित्य धूप भी दें।

माता छिन्नमस्ता अथवा चिन्तपूर्णी माता की उपासना से राहुकृत अनिष्ट शांत होते है। बटुक भैरव की उपासना और साधना से भी लाभ होता है। किसी भी प्रकार के प्राकृतिक ओर अकस्मात होने वाले कष्टों का कारक ग्रह राहु ही होता है। प्राकृतिक कष्टों के रूप में भूत, प्रेत, पिशाच सर्प संबंधी भय अग्निकाण्ड दीवार या पेड़ आदि का गिरना, भंवर में फंसना इत्यादि कार्यो के होते रहने पर सुरक्षा के लिए प्रत्यां मंत्र और नृसिंह कवच का प्रयोग करना चाहिए।

जातक नाग देवता की उपासना करे, पूजा-अर्चना करना नाग पंचमी को नाग-नागिन का जोड़ा चांदी से बनवाकर विधिवत पूजा करवाएं शिव मंदिर या नाग मंदिर में स्थापित कराएं। श्रावण के महीने में राहु अधिक अनिष्टकारी होने पर प्रति सोमवार रूद्र पाठ करने से लाभ होता है। कम से कम 13 की संख्या में नवनाथ का परायण करें।

शिव मंदिर के नित्य दर्शन करने से राहु कृत अनिष्ट शांत होकर जातक को लाभ होता है। ''ऊँ रां राहवे नमः'' यह राहु का संक्षिप्त मंत्र है। इसे 18000 बार जपना चाहिए। कभी भी भगवान शिव मंदिर की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। साथ ही शिव को एक लोटा जल बिल पत्र सहित चढ़ाना चाहिए। जीवन में कई बार कन्यादान करना चाहिए। अर्थात जातक को चाहिए कि वह बहन, भतीजी, भांजी या अन्य गरीब लड़कियों का कन्यादान करना चाहिए। कोयले बहाने से विशेष लाभ होता है। कम से कम पांच मुट्ठी कोयले विसर्जित करने चाहिए। राहु से पीड़ित व्यक्ति को घर का मुखिया नहीं बनाना चाहिए। महत्वपूर्ण निर्णय छोटे या अन्य लोगों की सहमति से करने चाहिए। ऐसे व्यक्ति को परिवार से अलग भी नहीं रहना चाहिए।

शिव पूजा सोमवार व्रत, श्रद्धा और भक्ति के साथ पितरों का श्राद्ध, तरपण, नागपूजा, भूरे रंग का कम्बल या शाल दान करते रहना चाहिए।

मैं औरत हूँ, और औरत होने पर नाज़ करती हूँ

अनामिका शर्मा
भान्जी प्रोमिला शर्मा
व.ले.प्र.अ.

दुर्गा कहो या सरस्वती,
गंगा, यमुना, सुहासिनी,
वो शक्ति है जो नारी रूप में वास करती है।
वो शक्ति है जिसका दुनिया सम्मान करती है।
ऐसी शक्ति का मैं आवाह्न करती हूँ,
मैं औरत हूँ और औरत होने पर नाज़ करती हूँ।।

वो बेटी है, जो हँसाती है
जो बाप का सहारा और सबका गौरव बन जाती है।
वो माँ भी है जो महान है।
जिसकी ममता एक वरदान है।
वो शक्ति है जो नारी रूप में वास करती है
वो शक्ति है जो प्रेम, शांति और सुख की मूरत कहलाती है।
ऐसी शक्ति का मैं आवाह्न करती हूँ।
मैं औरत हूँ और औरत होने पर नाज़ करती हूँ।।

दुनिया ने अत्याचार किया
भगवान के नाम पर सती का प्रचार किया
वो रोई, वो तड़पी फिर जाके कहीं विचार किया
कहते हैं हम बदल गए
पर बदले सिर्फ जुल्म के तरीके
देवी का दर्जा देकर, कपड़ों के नाम पर
बार–बार बलात्कार किया
वो लड़ती है, वो लड़ती रहेगी,
वो शक्ति है जो हर नारी में वास करेगी
ऐसी शक्ति का मैं आवाह्न करती हूँ।

कहते हैं तुम बढ़ो, जब चाह जागी,
तो यह लड़की है, पढ़कर क्या करेगी,
कहकर उसके पंखों को ही काट दिया,
वो उठती रही, वो उड़ती रही,
बार–बार गिरकर भी सम्भलती रही,
जब कुछ ना चला,
तो गरीबी के नाम पर उसे गर्भ में ही मार दिया।
वो बढ़ती रहेगी, वो लड़ती रहेगी,
वो शक्ति है, जो हर नारी में वास करेगी,
ऐसी शक्ति का मैं आवाह्न करती हूँ,
मैं औरत हूँ, और औरत होने पर नाज़ करती हूँ।
वो डरती थी, पर अब न डरेगी
वो मरती थी, पर अब उल्टा प्रहार करेगी
वो रोई भी, पर अब खुल कर हँसेगी
वो बेशक, पर अब कभी न रुकेगी
उन्मुक्त क्षितिज को उसने छूना है
चूड़ियां, झुमके नहीं, हिम्मत उसका गहना है
वो झांसी की रानी है, अकेले ही लड़ेगी
वो शक्ति है
जो मुझमें, आप सबमें सदैव वास करेगी
ऐसी शक्ति का मैं आवाह्न करती हूँ
मैं औरत हूँ, और औरत होने पर नाज़ करती हूँ।

वो आदमी

वन्दना राणा
(पत्नी जगदीश राणा स.ले.प.अ.)

वो टूटा हुआ
आदमी.....
भीतर – बाहर से
दिल से .....सपनों से
औलाद ओर उम्मीद से
जिसने.....
लगा दिया है दांव पर अपना
सुख – चैन, नींद, हँसी.....
यहाँ तक की
अपना जीवन भी
आज
हारे हुए जुआरी की तरह
ग़म के नशे में चूर
जा रहा है लड़खड़ाते हुए कदमों से,
कुछ होश नहीं,
कोई जोश नहीं,
उदासी लिए चेहरे में
अपार निराशा के अंधकार में डूबा हुआ,
खड़ा है दोराहे में अकेला
वो आदमी
लाचार है बहुत
लगता है कई दिनों से बीमार है!

अपना हाथ जगन्नाथ सेहत का साथ

सोम नाथ सोनी
वरिष्ठ लेखाकार

रोज सुबह उठकर जब मैं पढ़ने जा रहा होता था तो देखता था कि अंकल जी सड़क पर अकेले जागिंग करने जा रहे होते थे । डायबिटीज हो जाने के बाद डाक्टर ने उनसे नियमित रुप से सुबह–शाम दौड़ने के लिए कहा था । वे पूरी ईमानदारी से इसे निभा रहे थे । एक दिन मैंने उनसे पूछ लिया–' आप ने घर पर कई काम करने वाले लोगों को लगा रखा है, आप क्यों नहीं अपने काम कर लेते हैं ताकि आपका व्यायाम भी हो जाए और काम भी निपट जाएं ।' वो मेरा मुंह देखने लगे ।

फिर उन्होंने कहा– 'देखूंगा।'

विधार्थी जीवन के शुरुआती दौर में मैंने देखा था कि खुद के कामों को करते हुए मसलन झाड़ू लगाना, कपड़े धोना, अपने कपड़े इस्त्री करना, खाना बनाना । इन सब कामों को करने के बाद मैं काफी थकान महसूस करता था । यानी इतना तो तय है कि ये काम काफी मशक्कत वाले हैं ।

उस दिन सवेरे– सवेरे घूमने गया तो देखा कि अकंल जी के घर के सामने का रास्ता काफ़ी साफ़ नजर आ रहा था। मैंने उनके दरवाजे के सामने जाकर घर में झांका तो देखा कि वो पसीने– पसीने हो कर कुर्सी पर बैठे हुए हैं ।

उन्होनें मुझे देखा तो मुस्कराकर अंदर बुलाया और बोले– 'आज सुबह झाड़ू लगाने से मैंने शुरुआत कर ली है।' हैरत भरी आवाज़ में बोलते रहें कि कभी उन्हें ख्याल ही नहीं आया कि यह घरेलू काम सेहत से इतने गहरे जुड़े होंगे । वे कुर्सी से उठे और जाकर गिलास में पानी भरकर मेरे हाथों में देते हुए बोले –' तुम्हारी सलाह बहुत काम की थी । मेहनत से व्यायाम तो हो ही रहा है, खुद से काम करते हुए बड़ी मीठी संतुष्टि भी मिल रही है। नौकरी में रहते हुए यह सब काम करने का कभी अवसर ही नहीं मिल पाया । इसलिए इन चीजों की उपयोगिता नहीं समझ सका । लेकिन अब से अपने काम स्वयं करुंगा और एक स्वस्थ जीवन जिउंगा ।'

''सूरज''

सिद्धांत खानचंदानी
कक्षा छठी, केन्द्रीय विद्यालय, शिमला
(सुपुत्र श्रीमती समता खानचंदानी)

दिन के बढ़ने से
बढ़ा आता है वो मेरी तरफ
कुछ और जो आया करीब
तो धकेल दूँगा उसे,

चलता रहता है हर दिन
न जाने किस की तलाश में
रास्ता रोक के किसी दिन
दबोच लूँगा उसे

रंग मेरा जो
उसने गहराया है
दिन ढले चुपके से
नीला – हरा रंग दूंगा उसे

धूप की रेंज बढ़ाकर
उसने परेशां कर रक्खा है
कभी अकेले में मिलकर
झंझोड़ दूंगा उसे

पसीना बांटता रहता है
सूरज.....
कभी जो हाथ लगा
तो निचोड़ दूंगा उसे

''बंटे खेत खलिहान''

सुनील कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

संबधों की तनातनी में,
सहमा सा है मान।
शिकवा सुनता नहीं किसी की,
बड़ा रहा तकरार।
दुस्साहस के पाँव पड़ी है,
बेबस सी मनुहार।
लोकलाज अब खड़ी द्वार पर,
लेकर अपमान।
बहु खड़ी है नाक सिकौडे,
हाथ जोड़कर सास।
ओने–कोने दुबक गए हैं
हँसी–खुशी उपहास।
बहुत दिनों में आज खुले हैं,
दीवारों के कान।
क्रोध–लोभ ने डोरे डाले,
लेकर भय का जाल।
मोह विचारक मौन खड़ा है,
बन कर एक सवाल।
आँगन तब से व्याकुल है जब,
बंटें खेत खलिहान।

''उम्मीद''

गीता कमल
सहायक लेखा अधिकारी

जब-जब जो-जो होना है तब-तब सो-सो होता है।

इस दुनिया की भीड़ में खुद को क्यों खोता है।।

नई राह है नई चाह है, नई-नई है मंजिलें।

जीना ही जीवन है चाहे सुख मिले चाहे दुख मिले।।

आँख में आंसू आए हैं, पर होंठों पर मुस्कान भी रख।

खुशियां तुझको ढूंढ ही लेगी आज नहीं तो कल।।

राह पकड़ तू एक चला चल, मिल जाँएगे सारे हल।

छाया है घोर अंधेरा जो मेहमान है बस पल दो पल।।

बीच भंवर में नाव फसीं जो लगेगी एक दिन पार।

दीप जला विश्वास का मायूसी जाएगी हार।।

धैर्य धरो पुरूषार्थ करो मिलेगी एक दिन जीत।

आएगा कल नया सवेरा खोओ नहीं उम्मीद।।

नशे में सब संसार

अजीत सिंह
सम्बन्धी मुनेश कुमार (स.ले.प.अ.)

नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार
किसी को नशा चढ़ा दौलत का
समझे हर चीज को व्यापार
तो कोई गरीब को ही समझे
अपने जीवन का सार
नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार
किसी को नशा ईश्वर भक्ति का
छोड़ चला घर बार
तो कोई अपनों के साथ को समझे
ईश भक्ति का द्वार
नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार
किसी को नशा चढ़ा ताकत का
समझे निर्बल को बेकार
तो कभी निर्बल भी ताकतवर का
तोड़े सब अहंकार
नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार
किसी को नशा खूबसूरती का
उसे लगे कुरूप सब संसार
तो कभी कुरूप की होती देखी
जग में जय जयकार
नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार

किसी को नशा राजगद्दी का
खो दे अपनों का प्यार
तो कोई अपनों के प्यार की खातिर
देता गद्दी दुत्कार

नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार

कोई जवानी के नशे को
रखनाचाहे बरकरार
तो कोई उसके भ्रम को तोड़े
मार बुढ़ापे की तलवार

नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार

किसी को नशा चढ़ा लिखने का
देखे न दिन रात
तो कोई उसको पागल समझे
मूर्ख और बेकार

नशे में सब संसार रे भैया
नशे में सब संसार

जनसेवा जीवन का महत्वपूर्ण नियम

सरदार रविन्दर सिंह
एम.टी.एस.

सेवा साधना में मनुष्य को अपने बड़प्पन, पद-प्रतिष्ठा की भावना का त्याग करना आवश्यक है। स्मरण रहे कि सेवक का पद संसार में सबसे नीचा होता है। उसका स्थान जनता जनार्दन के पैरों के नीचे होता है। तभी तो वह विराट मानव की सेवा कर सकता है। जनसेवी को पद-प्रतिष्ठा बड़प्पन के सभी अलंकारों का त्याग करना आवश्यक है। महात्मा गांधी के पास एक सन्यासी आए, बापू ने पूछा-आप किस लिए आए है? जनता की सेवा करने के लिए? बापू ने कहा सेवा करनी है तो गेरूए वस्त्रों को उतारो क्योंकि महात्मा समझकर लोग उलटी आपकी सेवा करने लगेंगे। सेवा के समय हमें अपनी वैयक्तिक विशेषताओं, अलंकारों का त्याग करना आवश्यक है। अन्यथा सेवा एक तरह का प्रदर्शन रस्म बन जाती है। जैसे कि आज के लोग श्रमदान करते हुए फोटो खिंचवाते और छपवाते है।

लोक सेवक का हृदय जितना संवेदनशील होगा, उतना ही वह दूसरे की सेवा के अवसर प्राप्त कर सकेगा। संवेदना, पर दुःख, दूसरों की पीड़ा को समझने की सामर्थ्य प्रदान करती है। पत्थर दिल क्या जानेगा किसी के दुःख-दर्द को। हमें हृदय की सहज कोमलता का भी विकास करना चाहिए। दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझना, दूसरों की पीड़ा अपनी पीड़ा समझने से ही उनकी सेवा सहायता की प्रेरणा पैदा होती है।

आत्म विकास के लिए, सामाजिक उत्तरदायित्व मानवीय कर्तव्य के प्रति हमें जन सेवा, को जीवन का महत्वपूर्ण नियम बना लेना चाहिए। नित्य किसी न किसी रूप में कम सें कम एक व्यक्ति की सेवा का व्रत तो हम अत्यंत व्यस्त होकर भी निभा ही सकते है।

स्वयं पर गर्व करें

समता खानचंदानी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हम भारतीय हैं ..... अपनी जड़ों ..... अपनी सांस्कृतिक परिपाटी..... उसके खरेपन, उसकी मौलिकता और वैज्ञानिक उद्घाटनों में उसकी विस्तृत व्याख्याओं के सूत्रों में खुद को आवृत किए हुए ..... हम भारतीय है। सिंधू घाटी के तट पर उसकी उर्वरा शक्ति से सिंचित, पोषित हमारी संस्कृति सिंधू नदी के गौरवशाली इतिहास की भांति ही कालातीत है। नए का स्वागत और समाहित कर लेने की धारणक्षमता ने हमें विस्तार दिया, परन्तु वर्तमान में अनुकूलन की यही प्रवृति हमारे सांस्कृतिक ह्रास का कारण बन गई। 'सम्मान करने की' नैतिकता का स्थान 'प्रभावित होने' ने ले लिया और हम स्वयं के सिवाय अन्य सभी के प्रभाव में आने लगे। किसी देश की हानि उसके आर्थिक पतन से नहीं वरन् उसकी सांस्कृतिक अवनति से आंकी जाती है और हम अपनी परम्पराओं, अपनी भाषा और अपने वैदिक ज्ञान के प्रति जो विचार रखते है उसे बताने की आवश्यकता नहीं है। लॉर्ड मेकोले की शिक्षा पद्धति में शिक्षित हम अंग्रेजियत और उसके खुमार में ऐसे डूबे है कि हमें अपनी मौलिक भाषा धार्मिक कर्म-काण्डों की अवैज्ञानिक भाषा लगती है। देश का एक वर्ग ऐसा है जो संस्कृत भाषा में तो शून्य है परन्तु उनकी छद्म धारणा है कि संस्कृत में जो कुछ भी लिखा है वो पूजा-पाठ के मंत्र ही है। आईए वास्तविकता पर भी दृष्टि डालते है –

' 'चतुरस्त्रं मण्डलं चिकीर्षन्न् अक्षयार्थ मध्यात्प्राचीमभ्यापातयेन।
यदतिशिष्यते तस्य सह तृतीयेन मण्डलं परिलिखत्।''

बौधायन ने उक्त श्लोक को लिखा है। अर्थ है –

यदि वर्ग की भुजा 2a हो

तो वृत की त्रिज्या $r = [a+1/3a/2a-a)]$

$= [1+1/3(/2-1)]a$

ये तो गणित का सूत्र लगता हैं ईसा के जन्म के पूर्व पिंगल के छंद शास्त्र में एक श्लोक प्रगट हुआ था। हालायुध ने अपने ग्रंथ मृत संजीवनी में इस श्लोक का उल्लेख किया है, जो मैं यहां कर रही हूँ –

''परे पूर्णमिति।
उरिटादेकं चतुरस्त्रकोष्ठ लिखित्वा तस्या धस्तात्
उभयातोर्थनिष्क्रांतं कोष्ठव्दयं लिखेत।
तस्याप्यधस्तात् त्रयं तस्याप्यधस्तात् चतुष्टयं
यावदभिमतं स्थानामिति मेरू प्रस्तारः।
तस्य प्रथमें कोष्ठे एकसंख्यां व्यवस्थाप्य करूणमिदं प्रवर्तयेत्।

तत्र परे कोष्ठे यत् वृतसंख्याजात तत् पूकोष्ठयोः पूर्ण निवेशयेत्।''

आधुनिक शिक्षा में गणित पढ़े हुए शायद ही किसी भारतीय छात्र ने इसका नाम सुना हो, यह है 'मेरू प्रस्तार' परन्तु जैसे ही इसे 'पास्कल त्रिभुज' कहा जाएगा, सब पहचान जाएंगे। बिल्कुल ऐसे ही 'पाइथागोरस प्रमेय' को सभी जानते है, जो असल में बौधायन का शुल्व सूत्र है, जिसकी रचना का समय 1200 से 800 ईसा पूर्व माना गया है। शुल्वसूत्र है –

''दीर्घ चतुरस स्याक्ष्व्या रज्जुः पार्श्वमानी,
तिर्मम्ड़ानी च यत्पृथ्वभूते कुरु हस्ते दुर्भय करोति।

अर्थात दीर्घ आयत के विकर्ण के वर्ग का मान आधार एवं लम्ब के वर्गो का योग होता है। पाइथागोरस प्रमेय भी यही कहती है ना। प्रकाश के वेग को सायणाचार्य ने इस श्लोक में प्रतिपादित किया था

''योजनानं सहस्त्रे व्दे व्दे शते व्दे च योजने
एकेन निमिषार्धेन क्रममाण नमोस्तुते।''

इसकी व्याख्या करने पर प्रकाश वेग 64000 कोस–18500 मील आता है। प्रकाश के वेग का आधुनिक मान 186202. 3960 मील/सेकेण्ड है।

''चतुराधिकं शतमष्टगुणं व्दाषष्टिस्तथा सहस्त्राणाम्।
अयुतव्दयस्य विष्कम्यस्यासन्नों वृतपरिणाहः।''

ये कोई पूजा का मंत्र नहीं बल्कि गोले के व्यास एवं परिधि का अनुपात है जिसे हम पाई=22/7 के रूप में जानते है उक्त श्लोक को डिकोड करने पर हमें मिलेगा –

(100+4) 8+62000/20000 = 3.1416

ऋग्वेद में पाई का मान 32 अंकों तक शुद्ध है। और बहुत से उदाहरण प्रस्तुत करने योग्य है परन्तु तात्पर्य सिर्फ यही है हमें अपनी मौलिकता को प्रस्फुटित करने की आवश्यकता है ना कि दूसरी परिकल्पनाओं में स्वयं को स्थापित करने की। हम अपनी रचनात्मकता के व्योम में अपने अविष्कारों की खोज करें। अपनी मिट्टी, संस्कृति, भाषा पर गर्व करें।

अब सोचते हैं कि खुल कर जी ले जिंदगी

श्रीमती सुनीता ग्रेवाल
(पत्नी श्री मनोहर ग्रेवाल)
व.ले.प.अ.

अब सोचते हैं
कि खुलकर जी ले ज़िंदगी...
साँसें थम गई तो अरमान रह जाएंगे...

जो बटोरा है सदियों से
चलो अब खर्च कर लें
अलमारी में पड़े वो सामान रह जाएंगे...

चुप रहने की हमें नसीहत मिलती थी
आज वक्त का तकाजा है
जो कहना है कह दें
वार्ना दिल में घुटे गुबार रह जाएंगे...

दुनिया को जवाब देते उम्र निकल गयी
अब सोचते हैं सवाल कर लें,
पूछे नहीं थे जो,
गर अब भी न पूछे तो
दिल में अनकहे सवाल रह जाएंगे...

अनजान थे जो हुनर से हमारे
चलो उन्हें कुछ कर के दिखा दें
गर अब भी हम चुप रहे ...
तो वो अनजान ही रह जाएंगे...
जो तकरार में हमें हरा दिया करते थे
ना जीत पाए उनसे तो उनके गुमान रह जाएंगे...

ख्वाइशों को दबा कर
कठपुतली बन नाचते रहे
ज़िन्दगी भर जिनकी,
अब सोचते हैं आज़ाद हो जायें
खेंच लें डोर हाथों से उनकी,
अब भी सहते रहे तो उनके गुलाम ही रह जाएंगे...

अब भी न बोले तो कब बोलेंगे,
ओ...नादान बेबस परिंदे बेजुबान हैं
बेजुबान ही रह जाएंगे...

सुन ई ता – ऐ दिल दो दिन की हस्ती है तेरी
मगर जो कलम से कागज़ पे उतर आये
वो कलाम रह जायेंगे..

बस चला जा रहा हूं

संजीव कुमार
डी०ई०ओ०

बस चला जा रहा हूँ,
रास्तों का अन्त नहीं,
मज़िलों का पता नहीं,
पगडंडी भरी राहों पर,
धुँधली–सी रोशनी की ओर,
हाँथ में दीपक लिए,
कदम बढाए जा रहा हूँ,
बस चला जा रहा हूँ,
जीवन के सफर में,
खुद को ढूंढता हुआ,
दुनिया की रीत निभाता जा रहा हूँ,
अपने पराये का पता नहीं,
बस रिश्ता निभाता जा रहा हूँ,
मिलेंगी मंजिले एक दिन,
इस उम्मीद में,
वक्त के आगे सर झुकाता जा रहा हूँ,
चला जा रहा हूँ,
बस चला जा रहा हूँ।

मेरे पिता

कीर्ति चतुर्वेदी
वरिष्ठ लेखाकार

अरे–अरे कोई बात नहीं, चींटी मर गई,
ये कहकर मेरी चोट से मेरा ध्यान हटाया।
उंगली पकड़कर मुझे चलना सिखाया।
रास्तों से डरकर उन्हें बदलना नहीं,
चट्टाने पार करना सिखाया।
वो पापा ही थे जिसने प्यार करना सिखाया।
पहली दफा जब काँपते हाथों से मुझे उठाया था,
महफूज हूँ ये महसूस करवाया था।
जब चाँद को पाने की जिद कर बैठी,
तो आईना दिखाकर मुझे जोर से हसाँया था,
माँ ने ख्वाबों की दुनिया दी मगर,
पापा ने हकीकत को समझाया था।
कभी कडक कभी नरम रहकर,
मुझे हर मौसम में ढलना सिखाया था।
जब माँ ने डाँट–डाँट कर स्कूल भेजना चाहा,
तब पापा ने चोरी से अपनी स्कूटर पर,
सुबह से छुट्टी तक पूरा शहर घुमाया था।
अपने मन की करना, वो मुझे पापा ने सिखाया था।
वो मेरी पहली पैसों की चोरी हो,
बडों से सीना जोरी हो,
या स्कूल का पहला Bunk
माँ की मार से बचा कर गोद में बिठा, सही रस्ता दिखाया
मुझे सही गलत का फर्क करना पापा ने सिखाया।।

जब सबने Board का Preasure दिया

Subject Choose करने पर लेक्चर (Lecture) दिया

अब बड़ी हो गई हो, क्या पहनना है, कैसे उठना- बैठना है,

इन बातों ने जब मेरा आत्मविश्वास कमजोर किया,

तब जो करना है कर, मैं हूँ तो यह कहकर हौंसला बढ़ाया,

पापा ने मुझे दुनिया से लड़ने के काबिल बनाया।।

देर रात न आ, लड़कों से बात न कर,

कपडे थोडे छोटे नहीं है?

लडकी हो संभल कर रहना,

जब पापा ने मुझे रोका नहीं बल्कि मेरी पीठ ठोक कर

और मेरा पहलवान कहकर मुझे सिर्फ सुरक्षित रहना सिखाया।।

अच्छी सोच क्या है, ये पापा ने समझाया,

दुनिया की परवाह न कर मुझे रोका नहीं,

बस खुद की नजरों में उठना सिखाया,

आज जो हूँ जैसी हूँ ऐसा मुझे पापा ने बनाया।।

खुल कर हसँना, दिल खोल कर रोना,

दिये सा जलकर, सूरज सा रोशन होना,

खुद के लिये खड़े होना और, सबको साथ लेकर चलना

पापा ने खुद के रूप में जिंदगी का सबसे हसीन तोहफा दिया है।

गलतियों से डरना नहीं, उन्हे सुधारते जाना सिखाया।

मेरी बेबाक शाख्सीयत को पापा ने बनाया है।

अपने मन की करना मुझे पापा ने सिखाया है।

ऊँगली पकड़कर मुझे चलना सिखाया है।।

कविता

विजयलक्ष्मी
सहायक लेखा अधिकारी

मानस पटल पर
उभरती हुई
कुछ स्मृतियां
कुछ काल्पनिक तस्वीरें
कभी गोचर
तो कभी ओझल होती हुई
कभी संवेदनापूर्ण
कभी भावहीन
उनको आकार देने के प्रयास में
लेखनी खुदबखुद
अनवरत चलती जाती है
शब्दों की माला से
तब जन्म लेती '' कविता''
जो अपने ही
मन के उद्‌गारों का,
भावना का, कल्पना का
करती है सृजन
अनछुए पहलू जिन्दगी के
कुछ भाव जो अर्न्तमन में ही रहे
कुछ स्मृतियां जो जिन्दगी है
कविता संजो लेती है सबको
अपनी व्यापकता में
और जी लेती हुँ मैं भी
उन सभी पलों को
अपनी रचना में
आत्मविभोर हो उठती हुँ
देख कर अपनी कल्पना का
सजीव रूप इस कविता में।

अन्तिम यात्रा का वर्णन

अरूण पारीक
कल्याण सहायक

था मैं नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था,
मुझे बड़े प्यार से सजाया जा रहा था,
ना जाने था वो कौन सा अजब सा खेल मेरे घर में,
बच्चों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था,
था पास मेरा हर अपना उस वक्त,
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलाया जा रहा था,
जो कभी देखते भी न थे मोहब्बत की निगाहों से,
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था,
मालूम नहीं क्यों हैरान था हर कोई सोते हुए देख कर,
जोर–जोर से रोकर मुझे जगाया जा रहा था,
काँप उठी मरी रूह वो मंजर देख कर,
जहाँ मुझे हमेशा के लिऐ सुलाया जा रहा था,
मोहब्बत की इन्तहा थी जिन दिलों में मेरे लिए,
उन्ही दिलों के हाथों आज में जलाया जा रहा था,
लाजवाब लाइनें
इस दुनिया में कोई किसी का हमदर्द नहीं होता,
लाश को शमशान में रखकर अपने लोग ही पूछते हैं,
यहाँ अभी और कितना वक्त लगेगा ।

जो बीत गया सो बीत गया।

संजीव कुमार
डी०ई०ओ०

जो बीत गया सो बीत गया,

माना वह पल प्यारा था,

आँखों का तारा था,

जिसे संजोकर रखा,

वह डूब गया,

आसमां को देखो,

कितने तारे टूट गए,

कितने अपने छूट गए,

नदियों को देखो,

कितने पीछे छूट गए,

कितने अपने रूठ गए,

पर कब वे शोक मनाते हैं,

गम तो उन्हे भी होगा,

पर उसका शोक क्या,

जो बीत गया सो बीत गया।

"हकीकत"

लवली चौहान
लिपिक, (लेखा परीक्षा)

हर अच्छा काम करने वाला आदमी महान नहीं होता,
हर बड़े आदमी का नाम बदनाम नहीं होता।
सारा खेल किस्मत का ही होता है वरना,
हर प्यार करने वाला आदमी आबाद नहीं होता।।

दिल में छुपी हर बात का मतलब, राज नहीं होता,
आँखों से किए गए हर सवाल का जवाब नहीं होता।
कैसे बचाए धोखेबाजों से जिंदगी को,
परायों को छोड़ो, आजकल अपनों पर भी विश्वास नहीं होता।।

सामने दिखने वाले हर आदमी का दिल साफ नहीं होता,
किसी की इज्जत के साथ किया गया गुनाह माफ नहीं होता।
किस तरह अपने दामन को बचाएँ हम,
पीछे आने वाले हर आदमी का धर्म ईमान नहीं होता।।

सच्ची लगन से किया गया प्रयास नाकाम नहीं होता,
जिम्मेवारी लेने वाले हर आदमी को आराम नहीं होता।
खुद ही अगर सम्पूर्ण होते तो,
हमारी गलतियाँ सुधारने वाला, भगवान नहीं होता।।

दुनिया में गमों की कमी नहीं,
लेकिन खुशियों का भी अकाल नहीं होता।
इस कम्बख्त गम भुलाने के लिए लोग पीते तो हैं,
लेकिन गम भुलाने की हर वस्तु का रंग लाल नहीं होता।।

आँखों से छलके हर दुःख का सार नहीं होता,
जिंदगी खत्म होने का मतलब बर्बाद नहीं होता।
जिंदगी तो हर किसी को धोखा देती है,
वरना हर नदी के पानी के किनारे शमशान नहीं होता।।

''चीजें''

वन्दना राणा
(पत्नी जगदीश राणा)
स.ले.प.अ.

इन्सान से अच्छी
तो
वस्तुये हैं,
जो सालों साल चलती हैं
जिंदा रहती हैं,
दिलों में बसती हैं,
बड़े अदब से सजी–संवरी रहती हैं
दरों दिवारों में,
सलीके से महफूज रहती है,
घरों में
चीजें बोझ नहीं लगती
सहेजी जाती हैं
यादों में,
कभी–कभी बेकार पड़ी भी
सहलाई जाती हैं बड़े प्यार से हाथों से,
संभाली जाती है,
जरा सी खरोंच लगने पर भी
ठीक करवाई जाती है,
अक्सर देखकर
सोचती हूँ,
काश! मैं इन्सान न होकर
कोई वस्तु होती,
तो घर के कोने में
जगह मेरे लिए भी होती
कहीं न कहीं.....!

आओ, गांव की ओर चले

एच०आर० जसपाल
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
(कविता – पाठ प्रतियोगिता में प्रथम)

भर गया अब मन शहर की घुटन से
खुली आवो – हवा की ओर चले
जीने में जहाँ सुकून मिलता है
ज़िंदगी की नइया उस ओर मोड़ चले
कुछ दिन ही सही
आओ, गांव की ओर चले ।
मनभावन आंगन और कूचे
पिपल की छइंया में चौपाल सजाएगें
गलियों, पगड़डियों से विचरते हुए
उमंग, उल्लास, हंसी – खुशी से
मीठे – मीठे गीत गुन गुनाएगें
फिर से बटोरेंगे अपनो की चाहत
ऐसी उत्कृष्ट आशा की लौ
दिल में दिन – रैन जले,
कुछ दिन ही सही
आओ, गांव की ओर चले।
सौंधी – सौंधी खुशबू मिट्टी की
फसलों से लहराते खेत खलियान निहारेगें
वादियों की निखरती हरियाली में
कलरव कर पक्षी भी खुशी जताएगें
झूमेंगे नाचेंगे गाएगे मिलकर
ऐसे प्रेम मिलन की खातिर
दिल में सुकून के पल पालें
कुछ दिन ही सही
आओ, गांव की ओर चले।
ऊंचे – नीचे पहाड़ों की कतारें
उनमें बहते झरनों – नालों की सरगम
देवी – देवताओं के ढोल – नगाड़ो की ताल
कभी जागरण, कभी भजन – संध्या की गूंज
ऐसे लम्हों को फिर से जीने
मन में भाव दृढ़ कर चले
कुछ दिन ही सही
आओ, गांव की ओर चले।
स्वच्छ हवा की महक के झोंके
जब बिखरेगे घर – आँगन में
भान्ति – भान्ति के फूल खिलेंगे
रिम – झिम बरसते सावन में
सुखी पलों का एहसास मिलेगा
प्रसन्नता भर जाएगी मनभावन में
मन में शांति असिम पाने को
ज़िंदगी की राह उस ओर मोड़ चले,
कुछ दिन ही सही
आओ, गांव की ओर चले।
हर छोटे – बड़े उत्सव में मिलना
गांव के छोटे – छोटे मेलों का सजना
सुख – दु:ख बांटना, प्यार जताना
ईर्ष्या, द्वेष से परे का जीवन
हर तीज त्यौहार को मिलकर मनाना
अपनेपन का वो एहसास बटोरने
चलो शहर की तंग गलियां छोड़ चले
कुछ दिन ही सही
आओ, गांव की ओर चले।

फिर तलाश जिंदगी की

एच०आर० जसपाल
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

बनते – बिगड़ते हालात में न जाने
जिंदगी के लिए सहारा क्या होगा,
हवाओं में उमंग घुलती है जहाँ
इस दुनिया में ऐसा किनारा कहाँ होगा।

जिंदगी जब ढूंढती है मंजिल अपनी
बस एक कदम दूर लगती है जिंदगी,
मन में अंकूरित हो उठती है आशा तो
जीने की नई उम्मीद लगती हैं जिंदगी

मन के मृगछोनों में उभरते रंगों से
बनती – बिगड़ती अनेको तस्वीरो में,
कभी सहज़, कभी सरल तो कभी
बड़ी ही कठोर लगती है जिंदगी।

अंर्तमन की घनघोर गुफा में उतर कर
उज़ालो के जब विचार उमड़ने लगते है,
इन विचारों को पगडंडियाँ बनाकर
शनैःशनैः सफर पर लगती है जिंदगी।

महकते फूलो की तरह उन्मुक्त
तमन्ना दिल में उंचाईयों को छूने की,
आँखो में संजो कर सपने अनेको
जीवन के सार को समझने लगती है जिंदगी

जिंदगी में जब 'शून्य' होता है
मन उदास, दिल छिप – छिप कर रोता है,
जरा सी खुशी उत्साहित कर जाती है जब
हर कठिनाई को पाटने में लगती है जिंदगी।

क्षणभंगूर है, रेत का घिरौंदा हैं मगर
जज्बातों को मिल जाए सम्मान तो,
अपने हिस्से का आसमान पाने को
उड़ान भरने में तत्पर लगती है जिंदगी।

गिरहें उलझती – सुलझती रहती है
मकसद मगर जीने का कोई तो हो,
भीतर की आवाज सुनकर लेती है फैसला
हर गिरह को खोलने में लगती है जिंदगी।

बीते हुए लम्हों के झरोकों से झांककर
गिरहों की उलझनों को समझती है जब,
गुण – दोष की कसौटी पर रखकर उनको
सुलझाने की कवायद में लगती है जिंदगी।

खट्टे – मीठे एहसास की धरोहर जब
अपने अंतिम पड़ाव की दहलीज पर होती है,
उम्मीदों की डोर सरकने लगती है हाथ से, तब
जीवन की नई तलाश, नए सफर में लगतीं है जिंदगी।

एक पाव मुस्कुराहट

शैलेश सोनी
वरिष्ठ लेखाकार
(कविता -पाठ प्रतियोगिता में द्वितीय)

सुबह-सुबह की मीठी धूप
और हाथों में गर्म चाय
रोज की तरह बैठे थे सब
अपने अड्डे पर रंग जमाए,
बुजुर्गो का हुजूम भी था
जवानों का जनून भी था
अपनी अपनी दुनिया में..... यूं समझ लो
हर कोई मशगूल ही था।
बगल में नाश्ते का ठेला भी था
लोगों का रेला भी था
कुछ आ रहे थे,
कुछ जा रहे थे..... और
हमारे जैसे कुछ, वहीं अपने
भविष्य की योजना बना रहे थे।
वहीं करीब दस साल का एक बच्चा था
देखने में मासूम ओर सच्चा था
साथ उसके एक छोटी लड़की नजर आयी
कपड़े गन्दे और रूप बिगड़ा था
लेकिन मासूमियत का रंग, चेहरे पर खिला था।
अंगुली पकड़ते मेरी उसने बोला-
''कुछ दे दो... खाने को दे दो''!
किसी ने उसे जाने को कहा
किसी ने फटकार लगायी,
फिर कुछ मिल जाने की चाह में
उसकी नजर मुझ पर आयी!
देख कर उनको ये लगा
एक तरफ हम अपनी किताबी
गणित को हल करने में लगे हैं,
वहीं दूसरी ओर न जाने कितने
जिन्दगी की अनगिनत उलझी हुई
पहेलियों को सुलझाने में लगे हैं।
हमारी गणित तो त्रिकोणमिति से शुरू होकर
मेन्सुरेशन पर खत्म हो जाती है,
लेकिन यहां ... हर रोज
सुबह से शाम ढलने तक

जिन्दगी नये आंकड़ों के साथ
एक नया सवाल ला देती है।
फिर मैंने उसे कुछ खाने को दिया
पल भर मुस्कुराने को दिया
उस नाश्ते वाले ने मुझे ऐसे देखा
जैसे मैंने विश्व बैंक से उधार मांग लिया
''और पैसे मिल जायेंगे''
मैंने भी मुस्कुरा कर कहा।
इस बीच हम फिर से
अपनी भविष्य की चिन्ता में डूब गये
चाय के दूसरे दौर में
इन सब बातों को भूल गये
हम सांसारिक भूगोल, कल के इतिहास
और रोज के विज्ञान को समझने की राजनीति में लगे थे
और वो बच्चे...अपने भूख के समाज शास्त्रों को सुलझा रहे थे।
फिर वो बच्ची आयी
ओर अपना मुंह पोछते हुए बोली
''..... खा लिया''
उसके गालों पर लगे
चावल के चंद दाने बता रहे थे
जिन्दगी चन्द सिक्कों की मोहताज नहीं
सड़कों पर दौड़ती है ऐसी जिन्दगियां कई
इस कशमकश में हम बहुत आगे बढ़ जाते हैं
लेकिन छोटी-छोटी खुशियों को पीछे छोड़ आते हैं,
प्रतिस्पर्धा ओर जिम्मेदारियों की इस दौड़ में
पल भर की जो राहत है।
कुछ ओर नहीं वो .....
'एक पाव मुस्कुराहट है,
उनको देखा, तो वो चले जा रहे थे
मुट्ठी में बंद किस्मत को लिए
अपने हाथ में,
जैसे गरीबी की फुटपाथ पर
मुस्कुराहट फिर से दौड़ पड़ी हो
एक नयी खुशी की तलाश में।

सफेद चादर

आरती शर्मा
सुपुत्री श्री दिनेश शर्मा
लेखा अधिकारी

उन छोटी-छोटी तंग गलियों में,
जहां हम, कभी छुपन छुपाई खेला करते थे,
आज वहां धूल की सफेद चादर बिछी हुई है।
हँसी गायब सी है अब उन गलियारों से कहीं,
जहां कभी बचपन के खेल खेले जाते थे,
वहां अब जिन्दगी के खेल खेले जाते हैं।

वहीं बगल में एक छोटा सा घर हुआ करता था,
वो तब भी खण्डहर, आज भी खण्डहर है।
कभी-कभी वहां बैठकर हम सपने बुन लिया करते थे,
अब उसी जगह में जिंदा लाशें मौत चुना करती हैं
नन्ही शरारतों से जो धूप खिला करती थी,
अब दर्द की चिल्लाहटों में धीरे-धीरे जला करती है।

जिन हाथों में कभी गेंद ओर बल्ला हुआ करता था,
उन हाथों से अब सिगरेट का धुआँ उड़ा करता हैं
जिन दुकानों में कभी टॉफियां बिकती थी,
वहां अब सिर्फ चिट्टा बिकता है।

आँखों में, जिनमें हजारों सपने पनपते थे कहीं,
अब जिंदा ही मर जाने का खौफ छिपता है,
नसों में उनके अब लहू नहीं नशा दौड़ता है।
और मौत से भी तो अजीब सी दोस्ती हो गई है
इन गलियों की,
कम्बख्त एक बार बुलाओ, सौ बार चली आती है।

प्रयागराज या इलाहाबाद

शैलेश सोनी
वरिष्ठ लेखाकार

इलाहाबाद जिसे देवनगरी प्रयाग भी कहा जाता है, एक प्राचीन शहर जो इतिहास के प्रारम्भिक समय से अस्तित्व में है। एक ऐसा शहर जिसका धार्मिक महत्व किसी भी प्रश्न से परे है और जिसने स्वतन्त्रता की लड़ाई में स्वंय को साक्षी बनाया। शहर जो आजादी के लिए शहीद होने वाले स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों से लेकर कुंभ में आने वाले महान साधु–सन्तों की कहानियों से भरा है, गवाह है हर उस घटना का जो इतिहास के पन्नों पर दस्तक देने से पूर्व इस शहर से होकर गुजरी है।

वर्तमान में इसका नाम बदलकर प्रयागराज कर दिया गया है। कई लोगों ने इसका समर्थन किया तो कुछ ने यह कहकर आपत्ति जताई कि क्या किसी का नाम बदलकर उसकी पहचान, उसके अस्तित्व को बदला जा सकता है। और कुछ दुविधा मे रहे कि इसे इलाहाबाद कहा जाए या प्रयागराज! यदि शाब्दिक अर्थ की बात की जाए तो इलाहाबाद जिसका प्रारम्भिक नाम "अल्लाहाबाद" था, कालान्तर में आम बोल चाल की भाषा में अल्लाहाबाद से इलाहाबाद हो गया। अल्लाहाबाद जिसका अर्थ होता है जहां अल्लाह आबाद है अर्थात खुदा का घर। वहीं दूसरी ओर प्रयागराज की बात की जाए तो प्रयागराज दो शब्दों से मिलकर बना है– प्रयाग+राज! प्रयाग अर्थात संगम तथा राज अर्थात राजा। अतः प्रयागराज का अर्थ हुआ संगम का राजा। चूंकि भारतवर्ष में कई संगम है किन्तु यहां तीन पवित्र नदियों, गंगा, यमुना तथा सरस्वती का संगम है जिसमें सबसे विचित्र बात यह है कि इनमें से एक नदी सरस्वती, विलुप्त है अर्थात केवल नाम मात्र है, इसलिए इसे प्रयागराज कहा जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि प्रारम्भ में यहां ऋषि–मुनियों द्वारा संगम क्षेत्र के किनारे देव–पूजन तथा यज्ञादि किए जाते थे जिससे उस क्षेत्र विशेष का नामकरण 'प्रयाग' कर दिया गया। कालान्तर में यहां लोगों का जीवन शुरु हुआ और उन्होनें संगम क्षेत्र से इतर शहर में अपना जीवन यापन शुरु किया। मध्यकाल में मुगल साम्राज्य के दौरान मुगल शासक अकबर ने इस शहर को 'इलाहाबाद' नाम दिया, जिस सन्दर्भ में कुछ विद्वानों का यही कहना भी है कि अकबर द्वारा चलाए गए 'दीन–ए–इलाही' धर्म के आधार पर इस शहर का नाम इलाहाबाद पड़ा। किन्तु वह संगम क्षेत्र जिसे प्रयाग कहा जाता था उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह क्षेत्र आज भी प्रयाग के नाम से शहर में अपनी स्थिति बनाए हुए हैं।

ये तो हो गयी इस शहर के नामकरण की बात। अब इसकी जीवनशैली भी जान ली जाए। इसकी जीवनशैली थोड़ी अनोखी है। दही–जलेबी के साथ शुरु हुई सुबह की दौड़ किसी नुक्कड़–चौराहे पर आकर चाय की दुकानों पर हो रही देश–दुनिया के चर्चे के साथ अपनी अभिव्यक्ति देते हुए अपने–अपने काम धंधों पर आगे बढ़ जाती है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय, जिसे 'पूर्व का आक्सफोर्ड' भी कहा जाता है, शिक्षा के क्षेत्र में अपनी एक पहचान बनाए छात्रों के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र बना हुआ है। छात्र भी ऐसे जिनके लिए दोपहर में दाल–भात चोखा खाने के बाद सोना उठना ही अनिवार्य है जितना कि भोजन करने से पहले हाथ धोना। सांयकाल के समय विश्वविद्यालय परिसर के इर्द–गिर्द छात्रों के जमावड़े में देश–विदेश के मुद्दे पर ऐसी चर्चाएं होती है कि कोई व्यक्ति सिर्फ खड़ा भी हो जाए तो उसे किसी अखबार या समाचार चैनलों की आवश्यकता न पड़े। पर्यटन की दृष्टि से यहां विचरण करने के लिए भी कई स्थल है। कोई रिक्शा चालक भले ही आंठवी पास हो लेकिन किसी विदेशी पर्यटक से ऐसी फर्राटेदार अंग्रेजी बोलता है मानों अंग्रेजी भाषा का व्याख्याता हो। किसी भी बात में खुद को कम ना आंकने की कला इस शहर में अनोखी है। ऊर्जा, उत्साह और आत्मविश्वास मानों इस शहर की हवा में घुले हों।

किसी भी धर्म के त्योहारों को मनाने का अंदाज भी इस शहर का निराला है। गैर हिन्दू सुमदाय द्वारा सावन में कांवड़ियो की सेवा–भाव हो या मुहर्रम पर अकीदतमंदों के साथ मिल कर गैर–मुस्लिम लोगों का ताजिये का जुलूस निकालना। गुरु पर्व पर लोगों का एकत्रित होना हो या नवरात्रि के जागरण में जागना, होली में रंग खेलने से लेकर ईद में गले मिलने तक की जो तहजीब इस शहर में है शायद इसीलिए इसे 'गंगा–जमुनी' तहजीब कहते हैं। राजनीति की बात की जाए तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व से ही यह राजनीति का गढ़ रहा है। पंडित नेहरु से लेकर चन्द्रशेखर आजाद सभी के लिए यह उनकी योजनाओं का केन्द्र रहा है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो राजनीति यहां

की मिट्टी में बड़ी सहजता से फलती–फूलती है। और योगदान भी ऐसा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश को चार प्रधानमन्त्री स्वयं इस शहर ने दिये हैं।

प्रत्येक 12 वर्षों पर कुंभ तथा प्रत्येक 6 वर्षों पर अर्द्धकुंभ आयोजित करने वाला शहर जिसमें आने वाले कई सिद्धि प्राप्त साधु जिनके स्पर्श मात्र से यहां कि मिट्टी पवित्र हो जाती है वो 'इलाहाबाद' शहर नहीं अपने आप में एक संस्कृति हैं। यह सिर्फ नाम नही अपितु एक आदत है जो सुबह और शाम में ही सीमित नहीं है बल्कि खवाबो में भी जिन्दा रहती है। काशी शिव की नगरी है तो यह संगमनगरी। संगम भी ऐसा कि तीन बोल कर यहां दो नदियों में ही स्नान करा कर सारे पाप धुला दिये जाते हैं। राजनीति का गढ़ तो कूटनीति का ज्ञाता, नेता से लेकर अभिनेता तक का जन्मदाता, इतिहास के पन्नों में सुनहरे शब्दों में वर्णित और आधुनिकता की ओर अग्रसर। और तो और यहाँ तो गालियों का भी अपना साहित्य है। अन्त में यह कहना गलत न होगा कि जो यहां आया इसका होकर रह गया और जो गया इसे साथ लेकर गया। चाहे इलाहाबाद कहा जाए या प्रयागराज, दोनों अर्थ में इसका महत्व किसी भी प्रकार से कभी कम नहीं होगा क्योंकि यह शहर सिर्फ जमीन पर नहीं लोगों की सांसों में भी बसता है।

वर्षा जल के संरक्षण का महत्व

धर्मेंद्र कुमार
(वरिष्ठ लेखा अधिकारी)

''रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून
पानी गये न उबरे मोती मानस चून।।''

सृष्टि के निर्माण से ही जल का महत्व उतना ही रहा है जितना सभी प्राणियों के लिए ऑक्सीजन का महत्व होता है जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है।

प्रचीन काल से ही भारत विश्व गुरू रहा है जिसने हर क्षेत्र में विश्व को ज्ञान दिया है जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने कहा है कि यदि पृथ्वी पर पहलीबार ज्ञान की किरण आई वह स्थान भारत है जिसमें आज भी योग गुरु बनकर, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण आदि में अपना नेतृत्व प्रदान कर विश्व को मानव कल्याण के पथ पर अग्रसर कर रहा है।

जल संरक्षण के प्राचीन काल के हड़प्पा सभ्यता में एक स्थान धौलावीरा (गुजरात) में आज भी साक्ष्य उपलब्ध होते है जो इस बात का प्रमाण है कि भारत में वर्षा जल संरक्षण आज ही नहीं बल्कि आदि काल से ही महत्वपूर्ण विषय रहा है। आज वैश्विक परिदृश्य पर जल संरक्षण एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनकर उभर रहा है जिसके कारण समस्त प्राणियों को तरह-तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जैसे सूखा, पीने के पानी की अनुपलब्धता आदि।

आज भारत के विभिन्न राज्यों में अनेक स्थानों पर जल की समस्या उत्पन्न हो रही है, पिछले कुछ दिन पहले तमिलनाडू में पीने के पानी की किल्लत हो गई जिसके कारण वहां पानी के टैंकरों से परनी लेने के लिए लम्बी-लम्बी लाइन लग गई, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा विदर्भ क्षेत्र में पानी की कमी से सूखा पड़ गया जिससे जमीन बंजर हो गई वहां के किसानों ने अपने पशुओं को भी इसी कारण छोड़ दिया कि वह कहीं भी पानी मिले वहां जाकर अपनी आत्मरक्षा कर सके।

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड में पानी के लिए लोग रात-रात भर जागकर प्राकृतिक संसाधनों, अथवा स्त्रोतों से रिसते हुए जल की एक-एक बूंद को इकट्ठा करने लगे, पिछले वर्ष जल की कमी की वजह से हिमाचल प्रदेश सरकार ने शिमला में मई, जून में आने वाले पर्यटकों को यह कहकर वापस भेज दिया कि यहां पानी की उपलब्धता पर्याप्त रूप से नहीं है। वर्तमान में पूरे विश्व में जल संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये जा रहे है। भूमि जल स्तर दिन प्रतिदिन नीचे जाता जा रहा है नदियां सूख रही है तालाबों, झीलों में पानी अब नाममात्र ही बचा हुआ है ऐसे स्थिति में वर्षा जल संरक्षण मानव अस्तित्व को बचाने के लिए अन्धकार में उम्मीद की किरण प्रतीत हो रहा है जिसके लिए भारत सरकार अनेक कार्यक्रम चला रही है, जिसमें वाटर हार्वेस्टिंग एक महत्वपूर्ण योजना है। वर्तमान पूर्वोतर राज्यों में यह योजना पूर्णत: सफल हो रही है। वाटर हार्वेस्टिंग में प्रत्येक मकान की छत पर एक जल कुण्ड का निर्माण किया जाता है और उस कुण्ड में वर्षा का पानी एकत्रित हो जाता है और आवश्यकतानुसार उस जल को शुद्ध करके मानव उपयोग में लाया जा सकता है। इसके साथ-साथ ऐसे ही जल कुण्ड मकानों के पास ही जमीन के अन्दर भी बनाऐ जाते है जिनमें वर्षा जलसंरक्षण किया जाता है। जल संरक्षण के दोहरे लाभ है पहला तो आवश्यकतानुसार जल की उपलब्धता बनी रहती है साथ ही उस स्थान के आस पास जल स्तर भी ऊपर उठ जाता है जो आवश्यकता पड़ने पर

पृथ्वी जल को भ्झी वोर वैल द्वारा ऊपर निकाला जाना आसान हो जाता है।

भारत में सर्वाधिक जल की बर्बादी कृषि क्षेत्र में होती है किसान खेतों में पानी लबालब भर देता है जबकि फसल के लिए उपयोगी पानी के अतिरिक्त वाष्प बनकर उड़ जाता है इस समस्या से बचने के लिए भारत सरकार ने इजराइल से ड्रिपिंग प्रणाली की तकनीक ली है जिससे फसलों को आवश्यक जल ही पूर्ति के लिए दिया जाएगा इसी संदर्भ में हमारे प्रधानमंत्री जी ने नारा दिया कि 'वन ड्रोप, मोर क्रोप' यह जल संरक्षण में एक भविष्योनमुखी लाभकारी कदम सिद्ध होगा। महत्वपूर्ण तकनीकों के माध्यम से हम जल का संरक्षण कर पाते है तो हम मानव सभ्यता पर आने वाले खतरे से निपटने में कामयाब हो पायेंगे अन्यथा हमारी जीती जागती सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता, सुमेरियन सभ्यता, रोम की सभ्यता आदि की तरह इतिहास के पन्नों में दफन हो जाऐगी।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते है कि जल संरक्षण आज हमारे लिए महत्वपूर्ण विषय बन गया है जिसके लिए गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श करना चाहिए, सरकारों द्वारा इसके लिए अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है, यह कार्यक्रम तभी सफल हो पायेंगे जब हम अपनी भागीदारी इनमें सुनिश्चित करे अपना कर्तव्य समझें और इसके लिए जन जागरुकता अभियान चलाऐ जाऐं जिससे देश का प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी समझकर कार्यक्रम को अपने लक्ष्यों तक पहुंचा सके।

''जमीन जल चुकी है आसमान अभी बाकी है
समय पर बरस जाना ए बादलों
किसी का मकान गिरवी है तो किसी का लगान बाकी है।''

वर्षा जल संरक्षण किसानों की ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए उम्मीद की किरण है। हमें इसके संरक्षण के लिए आज ही संकल्प लेना चाहिए जिससे हम आने वाली पीढ़ी को खुशहाल जीवन देने में कामयाब हो सकेंगे।

कविता

अभिमन्यु
कमलेश राणा

ए खुदा! कहना तो नहीं चाहिये
पर तू नाइन्साफी कर गया ...
कर्जदार तो हम थे उसके
ओर कर्जे से वो मर गया....
ना कंधा
ना दफन होने को ज़मीन
ना ही सही दाम मिला
उसके हक की कमाई पर कोई ओर ही तर गया ...
था तो वो भी जिद्दी
अपना फर्ज ना छोड़ा
जाते-जाते, भर गिद्धों का पेट
उन्हे भी कर्ज़दार कर गया।

समता खानचंदानी
हिन्दी अनुवादक
हिन्दी अनुभाग

तजुर्बा – ए – शिमला

कदमों को नए मोड़ ने
जिस राह पे उतारा
उन रास्तों पे मंजरों ने
पुरज़ोर पुकारा
आवाज में वो नक्श
की जी ठहर ठहर जाए
एहसास में खुलूस
सिम्त महक महक जाए

ऊंचे चनारों ने उफक् को
छू ही लिया बस
पंछी की चोंच में
फंसी हो आसमां की हद

ऊपर को चलते वक़्त हो
सांसे ढलान पर
ढलती पहाड़ियों ने दिए
पैरहन को पर

कुहासें ढांक देते है
किसी टुकड़े के गुंबद को
हरे रंगो में थोड़ा और
गहरा रंग भरते है
अधूरी धूप ने घोला
किसी की चाय में अदरक
उसी से रंग में कुछ
जर्द पीला रंग भरते हैं

बड़े ठंडे अंधेरों में
ठिठुरती उंगलियों सी हो गई हूं
नए चेहरों... नए नामों की गूंजो में
घुली मिसरी के मानी हो गई हूं
मुहाजिर तितलियों सी हो गई हूं
पहाड़ों में पिघलती बदलियों सी हो गई हूं।।

वर्ष 2018 – 19 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (ले. व ह.)

क्रम सं०	सर्व श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति
1.	श्री औंकार सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	30 – 04 – 2018
2.	श्री रघुवीर सिंह जिस्टू	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31 – 05 – 2018
3.	श्रीमती सुषमा शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31 – 05 – 2018
4.	श्री रमेश चन्द	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31 – 05 – 2018
5.	श्री सुख राम	वरिष्ठ लेखाकार	31 – 05 – 2018
6.	श्रीमती विमला चन्देल	लेखा अधिकारी	30 – 06 – 2018
7.	श्रीमती किरन गोहरा	वरिष्ठ लेखाकार	30 – 06 – 2018
8.	श्री चतर सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	31 – 8 – 2018
9.	श्रीमती संतोष गौतम	वरिष्ठ लेखाकार	30 – 9 – 2018
10.	श्री सुरिन्द्र कुमार चौहान	वरिष्ठ लेखाकार	31 – 10 – 2018
11.	श्री शमशेर सिंह	सहायक लेखा अधिकारी	30 – 11 – 2018
12.	श्री यादवेन्द्र जोशी	पर्यवेक्षक	30 – 11 – 2018
13.	श्री ओम प्रकाश मुरारका	वरिष्ठ लेखाकार	30 – 11 – 2018
14.	श्री ज्ञान सिंह चौहान	वरिष्ठ लेखाकार	31 – 01 – 2019
15.	श्रीमती कमला देवी	पर्यवेक्षक	31 – 03 – 2019
16.	श्री विजय कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखाकार	31 – 03 – 2019

वर्ष 2018 – 19 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखापरीक्षा)

1.	श्री देव राज	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30 – 04 – 2018
2.	श्री कुलदीप सिंह ठाकुर	पर्यवेक्षक	30 – 04 – 2018
3.	श्री किशन चन्द	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31 – 05 – 2018
4.	श्री माया दत्त भारद्वाज	कल्याण अधिकारी	30 – 06 – 2018
5.	श्री कमल किशोर शर्मा	वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी	30 – 06 – 2018
6.	श्री अनिल कुमार नैयर	वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी	31 – 07 – 2018
7.	श्री सुरेश सिंह ठाकुर	पर्यवेक्षक	31 – 07 – 2018
8.	श्री लेख राम	एम.टी.एस.	31 – 10 – 2018
9.	श्री हरीश्वर दयाल सरकेक	पर्यवेक्षक	30 – 11 – 2018
10.	श्री सोम कृष्ण मेहता	वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी	31 – 12 – 2018
11.	श्री सुभाष चन्द	वरिष्ठ निजि सचिव	31 – 12 – 2018
12.	श्री देश राज	कैन्टीन अटैंडेंट	31 – 01 – 2019
13.	श्री छेरिंग पालजोर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31 – 03 – 2019
14.	श्री पूरण चन्द	पर्यवेक्षक	31 – 03 – 2019

हिन्दी पखवाड़ा – 2018

विजेताओं की सूची

क्र०	प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	उद्घाटन समारोह एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगितां	1. श्री रमेश लेखा परीक्षक 2. श्री विमल भारती लिपिक	1. श्री प्रभाकर तिवारी, डी.ई.ओ. 2. श्री राहुल पुंज, एम.टी.एस. 1. श्री उज्जवल कुमार राय, एम.टी.एस. 2. श्री उमेश भारद्वाज, एम.टी.एस.	—
2.	अनुवाद	श्री यादवेन्द्र जोशी, पर्यवेक्षक	श्रीमती मृदुला सूद, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	श्री सुर्दशन शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी
3.	वाद – विवाद	श्री हरीश जुल्का, सहायक लेखा अधिकारी	श्री जे०आर० शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	श्री अतुल तायल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
4..	आशुभाषण	श्री अरूण कुमार, डी०ई०ओ०	श्री हरीश जुल्का, सहायक लेखा अधिकारी	श्री अतुल तायल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
5.	श्रुतलेख	श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लेखाकार	श्रीमती गीता वैद्य, वरिष्ठ लेखाकार	श्री राजेश कुमार शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
6.	कविता पाठ	श्रीमती कविता जुल्का, वरिष्ठ लेखाकार	श्री अरूण कुमार, डी०ई०ओ०	श्री अभिमन्यु राणा, वरिष्ठ लेखा परीक्षक
7.	निबंध	श्री प्रेम प्रकाश, डी०ई०ओ०	श्री पंकज गुप्ता, लेखापरीक्षक	श्री अंकित शर्मा, लेखा परीक्षक
8.	टिप्पण – आलेखन	श्री नेत्र सिंह चौहान, सहायक लेखा अधिकारी	श्री राजेश कुमार शर्मा, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	श्रीमती मृदुला सूद, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
9.	कंप्यूटर पर हिंदी टंकण	श्रीमती सत्यावती, वरिष्ठ लेखा परीक्षक	श्रीमती वीना कुमारी, वरिष्ठ लेखा परीक्षक	श्री सुख लाल, वरिष्ठ लेखा परीक्षक